

p6



हार को नियति
मान लिया है कांग्रेस ने,

..... इंडियाज़ फास्टेस्ट ग्रोइंग न्यूज़ पेपर.....

मजहब और जाति-
आज की राजनीति के मजबूत हथियार



p3

सेन्सर टाइम्स

www.censortimes.com

डाक पंजीयन क्रमांक-एमपी/आईडीसी/1117/2019-2021

वर्ष-17

अंक-9

मासिक

1 दिसम्बर 2020

पृष्ठ-12

मूल्य- पाँच रुपये



p4

किसान नेता राकेश टिकैत ने कहा-

इस बार आर पार की लड़ाई है p5



तृणमूल कांग्रेस में अंसतोष के
स्वर मुखर

p12



अन्दर के पृष्ठ पर.....

सुशासन के लिये जरूरी है-

दायित्व का ईमानदारी से निर्वहन

P-7

रोजगार के नये अवसर-

अर्थव्यवस्था को बड़ा लाभ होगा

P-2

यूपी के बरेली में दर्ज हुआ

लव जिहाद का पहला केस

P-12

बॉलीवुड एक्ट्रेस उर्मिला मातोंडकर

होंगी शिवसेना में शामिल

P-12

सम्पादक की कलम से

किसान संगठनों के दिल्ली की सीमा पर डेरा डालने से राजनीतिक पार्टियों में सक्रियता है किन्तु हरियाणा के मुख्यमंत्री की इस टिप्पणी से कि पंजाब से आए कुछ खालिस्तानी आतंकवादी किसान संगठनों के साथ मिलकर देशविरोधी खेल खेल रहे हैं, यह चिंतनीय है। किसान इस प्रकार की भाषा नहीं बोलता कि जब इंदिरा को मार दिया तो मोदी को भी मार देंगे। किसान अपनी फसल की उचित कीमत चाहता है और एमएसपी से कम कीमत पर खरीद का विरोध कर रहा है। पंजाब के मुख्यमंत्री ने विधानसभा में एमएसपी से कम कीमत पर खरीद करने वालों के खिलाफ दण्डात्मक कार्रवाई संबंधी विधेयक पारित कराकर राज्यपाल के पास भेज दिया है। किन्तु सच तो यह है कि पंजाब में जो लोग कृषि बिल का विरोध कर रहे हैं उन पर राजनीति का रंग इतना गहरा है कि वे यही नहीं समझ पा रहे हैं कि उनके विरोध की रणनीति है क्या? इसीलिए वे कभी कहते हैं कि कृषि बिल जब तक सरकार वापस नहीं लेती तब तक वे वापस नहीं जाएंगे। इसीलिए वे कभी कहते हैं कि मोदी को मार देंगे, ऐसा कर देंगे वैसा कर देंगे। इस दृष्टि से पश्चिमी उत्तर प्रदेश में प्राभावी भूमिका निभाने वाले राकेश टिकैत की भारतीय किसान यूनियन के लोग बड़े ही संयमित तरीके से व्यवहार कर रहे हैं। उनका कहना है कि सरकार एमएसपी पर किसानों को संतुष्ट कर दे और उन्हें कुछ नहीं चाहिए। राकेश टिकैत की मांग है कि सरकार उनसे बात करे।

यह सच है कि सरकार की जिम्मेदारी है कि जिस वर्ग के लिए उसने कानून बनाया है वह उस वर्ग के लोगों को संतुष्ट करे और उनके संदेह दूर करने के लिए प्रयास करे। लेकिन यह तभी संभव है जब वे संतुष्ट हो या अपना संदेह दूर करना चाहें। प्रश्न है कि क्या पंजाब में ही किसान हैं और वे सभी एक यूनियन के मेंबर हैं? क्या पश्चिमी उत्तर प्रदेश में ही किसान हैं जो किसी यूनियन के सदस्य हैं? नहीं। किसान संपूर्ण पूरे देश में हैं और ज्यादातर किसानों ने कृषि बिल पारित होने के बाद खुशी जाहिर की। लेकिन पंजाब के किसानों में ज्यादातर किसान आदृष्टि का काम करते हैं। ये वही आदृष्टि हैं जो पूर्व में किसानी करते थे। आज इनकी संख्या 60 लाख से ज्यादा है और ये कांग्रेस तथा अकाली दल दोनों ही पार्टियों में प्रभावी हैं। जिसका कारण है कि दोनों पार्टियों के लिए कृषि बिचौलियों का समर्थन करना मजबूरी बन गया है। कृषि बिल के खिलाफ किसान यूनियनों में बेहद आक्रोश और आशंकाओं का बीज पहले कांग्रेस और बाद में अकाली दल ने रौपा था। इसके बाद शरारती तत्व भी इस आंदोलन में शामिल हो गए।

खैर, केन्द्र सरकार और दिल्ली पुलिस के सामने सबसे बड़ी समस्या यह है कि किसानों के बीच में मौजूद उपद्रवियों के भडकावों में आकर वह किसानों के खिलाफ कदम न उठाये तथा जितनी जल्दी हो सके उनसे बातचीत की जाए। दिसम्बर में इतनी ठंड बढ़ेगी कि किसान बीमार पड़ेंगे या फिर उनकी मृत्यु हो सकती है। ऐसे में दोषारोपण सरकार पर लगेगा। यही नहीं जैसे-जैसे आंदोलन बढ़ेगा वैसे-वैसे सब्जियों व अन्य चीजों के दाम भी बढ़ेंगे।

यह कहना सही है कि पंजाब में किसानों के विरोध में फायदा देखने वाले नेताओं को लगा यह विरोध तो उनके लिए लाभदायक हो सकता है किन्तु जब वे उनके कहने से भी नहीं माने तो अब कांग्रेस और अकाली दोनों ही विवश हैं। दोनों पार्टियाँ चाहकर भी अब कुछ नहीं कर सकते। अब बात केन्द्र सरकार की बात तो अब बिचौलिए के लिए सहूलियत देने पर तो वह विचार कर नहीं सकती। ले-देकर एमएसपी पर ही बात होगी। सरकार और जिम्मेदार किसान नेताओं को बातचीत का माहौल बनाना चाहिए ताकि उपद्रवी सफल न हो सके। कहने को तो किसान यूनियन का आंदोलन है किन्तु सच यह है कि इनमें न तो कोई आपसी सहयोग है और न तो कोई एक नेता जिसकी बात सभी मानें। यहां तक कि जिन अलग-अलग यूनियन के लोग आंदोलन कर रहे हैं उनके नेता के ही खिलाफ अलग-अलग गुट सक्रिय हैं। ऐसे में ही उपद्रवी अपना उल्लू सीधा करते हैं। किसान यूनियन और खुफिया तंत्र को ऐसे तत्वों पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

रोजगार के नये अवसर जिस तेजी से बढ़ रहे हैं उससे अर्थव्यवस्था को बड़ा लाभ होगा



एक अनुमान के अनुसार, कोरोना महामारी के चलते देश में लगभग 20 लाख रोजगारों पर विपरीत प्रभाव पड़ा था। अतः केंद्र सरकार के सामने अब सबसे महत्वपूर्ण सोच का विषय यह है कि किस प्रकार देश में औपचारिक क्षेत्र में रोजगार के अधिक से अधिक अवसर, निर्मित किए जायें। साथ ही, कोरोना महामारी के दौरान छोटे-छोटे उद्योगों को दिवालिया होने से बचाना भी एक और महत्वपूर्ण विषय केंद्र सरकार के सामने था। उद्योगों को दिवालिया होने से बचाने के लिए तो तरलता सम्बंधी एक विशेष पैकेज प्रदान किया गया, जिसका बहुत ही सकारात्मक प्रभाव दिखाई दिया एवं लघु एवं मध्यम उद्योग तो पुनः प्रारम्भ हो गए। केंद्र सरकार के प्रयासों से शहरों से ग्रामों की ओर हुए मजदूरों की पलायन सम्बन्धी समस्या को भी बहुत ही सफल तरीके से हल कर लिया गया। महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना के अंतर्गत केंद्र सरकार ने राशि का आवंटन बढ़ाकर ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के कई अवसर निर्मित किए। गरीब वर्ग को खाने पीने एवं मूलभूत आवश्यकताओं की वस्तुएं उपलब्ध कराने के कई गम्भीर प्रयास किए गए एवं इन प्रयासों में केंद्र सरकार को सफलता भी मिली।

वित्तीय वर्ष 2020-21 की द्वितीय तिमाही (जुलाई-सितम्बर) में केंद्र सरकार ने कई वित्तीय उपायों की घोषणा की थी ताकि विनिर्माण क्षेत्र, खनन क्षेत्र, ढाँचागत निर्माण क्षेत्र आदि जो अप्रैल-जून 2020 के दौरान एकदम बंद हो गए थे, उन्हें पुनः प्रारम्भ किया जा सके। इन वित्तीय उपायों का भी बहुत सफल प्रभाव रहा एवं इन क्षेत्रों में औद्योगिक इकाइयों में उत्पादन पुनः प्रारम्भ हो गया। अब वित्तीय वर्ष 2020-21 की तृतीय तिमाही (अक्टोबर-दिसम्बर) में सेवा क्षेत्र की इकाइयों एवं गृह निर्माण क्षेत्र पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है ताकि इन क्षेत्रों में आर्थिक गतिविधियों में तेजी लायी जा सके। इन क्षेत्रों में रोजगार के अधिक अवसर निर्मित किए जा सकते हैं। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि केंद्र सरकार बहुत ही बारीकी से यह देख रही है कि किस क्षेत्र को कब-कब क्या आवश्यकता है एवं अर्थव्यवस्था के कौन से क्षेत्र शीघ्र पुनर्जीवित हो रहे हैं एवं कौन से क्षेत्र पुनर्जीवित होने में समय ले रहे हैं। इन क्षेत्रों को किस प्रकार की परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है एवं इन परेशानियों को किस प्रकार दूर किया जा सकता है। इस सम्बंध में उचित समय पर सही उपाय भी हो रहे हैं। केंद्र सरकार द्वारा बहुत ही व्यवस्थित तरीके से कार्य किया जा रहा है।

हाल ही में वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने कई महत्वपूर्ण घोषणाएं की हैं। देश में रोजगार एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है जिस पर अब फोकस किया जा रहा है। लॉकडाउन की अवधि के दौरान देश में कई उद्योगों पर विपरीत असर पड़ा था एवं रोजगार के लाखों अवसरों का नुकसान हुआ था। अतः सबसे बड़ी घोषणा रोजगार को पुनर्जीवित करने के सम्बंध में है। मार्च से सितम्बर 2020 की अवधि के दौरान जिन लोगों के रोजगार चले गए थे अथवा जिनके रोजगार में दिक्कत आई थी, अब अगर नियोजता उनको दुबारा से रोजगार देता है तो केंद्र सरकार ईपीएफ में 24 प्रतिशत अंशदान (12 प्रतिशत नियोजता का हिस्सा और 12 प्रतिशत कर्मचारी का हिस्सा) अपनी ओर से प्रदान करेगी। जिन नियोजताओं के पास 50 से कम कर्मचारी कार्यरत हैं उन्हें कम से कम दो कर्मचारियों की नियुक्ति करनी होगी एवं जिन नियोजताओं के पास 50 से ज्यादा कर्मचारी कार्यरत हैं उन्हें कम से कम 5 कर्मचारियों की नियुक्ति करनी होगी, तभी वे इस योजना का लाभ लेने के लिए पात्र हो सकेंगे। जिन उद्यमों में 1000 से कम कर्मचारी कार्यरत हैं उन्हें 24 प्रतिशत की राशि का पूरा लाभ मिलेगा एवं जिन उद्यमों

में 1000 से अधिक कर्मचारी कार्यरत हैं उन्हें केवल कर्मचारी के 12 प्रतिशत हिस्से की राशि का लाभ मिलेगा। निजी क्षेत्र को यह बहुत बड़ा लाभ प्रदान किया जा रहा है। कर्मचारी के आधार कार्ड का उपयोग करके हितग्राही के खाते में सीधे ही राशि जमा की जाएगी। रोजगार के अवसरों को पुनर्जीवित करने के लिए यह एक बहुत बड़ा उपाय माना जा रहा है।

गृह निर्माण उद्योग अकुशल श्रमिकों के लिए रोजगार के अवसर उत्पन्न करता है। अतः प्रधानमंत्री आवास योजना के अंतर्गत 18000 करोड़ रुपए का अतिरिक्त आवंटन किया गया है, ताकि शहरी क्षेत्रों में अधिक से अधिक मकान इस योजना के अंतर्गत बनाए जा सकें एवं रोजगार के अवसर निर्मित हो सकें। साथ ही अभी लागू नियमों के अनुसार, दो करोड़ रुपए तक के मकान बेचने पर यदि सर्कल दर एवं अनुबंध दर में 10 प्रतिशत से अधिक का अंतर है तो मकान/फ्लैट क्रेता एवं विक्रेता दोनों को ही आय कर नियमानुसार देना होता है परंतु इस नियम को शिथिल कर 20 प्रतिशत तक के अंतर तक छूट प्रदान की जा रही है।

उत्पादन आधारित प्रोत्साहन योजना का दायरा भी बढ़ाया जा रहा है। पहले इस योजना के अंतर्गत केवल 3 उद्योगों को शामिल किया गया था परंतु अब 10 और उद्योगों को भी इस योजना में शामिल कर लिया गया है जिन्हें 146,000 करोड़ रुपए की राशि का प्रोत्साहन दिया जायेगा। इस प्रोत्साहन योजना के लागू किए जाने से इन उद्योगों में विकास की रफ्तार बढ़ेगी एवं रोजगार के नए अवसरों का सृजन होगा। कुल मिलाकर सरकार अब प्रयास कर रही है कि औपचारिक क्षेत्रों में रोजगार के अधिक से अधिक अवसर निर्मित हों। आज देश में 83 प्रतिशत रोजगार अनौपचारिक क्षेत्रों में निर्मित होते हैं।

किसानों को खाद हेतु सब्सिडी प्रदान करने के लिए 65,000 करोड़ रुपए की अतिरिक्त व्यवस्था केंद्र सरकार द्वारा की जा रही है। यह खाद सब्सिडी देश में 14 करोड़ किसानों को उपलब्ध करायी जाएगी। देश में बुनियादी ढांचा विकसित करने के उद्देश्य से आधारभूत निवेश फंड को 6,000 करोड़ रुपए केंद्र सरकार द्वारा प्रदान किए जा रहे हैं ताकि बुनियादी ढांचा विकसित करने हेतु नए उद्यमों को वित्त उपलब्ध कराया जा सके।

विश्व में कई विकसित देशों ने तो बहुत बड़ी राशियों के आर्थिक पैकेज की घोषणाएं की थीं परंतु विकासशील देशों के पास पूंजी का अभाव है अतः उपलब्ध राशि का सही तरीके से इस्तेमाल हो इसका ध्यान रखना बहुत ही आवश्यक है ताकि राजस्व घाटे से संबंधित नियमों का पालन भी किया जा सके। इसलिए भारत सरकार भी सोच समझ कर सही समय पर ही आर्थिक घोषणाएं कर रही है। अभी तक 29.88 लाख करोड़ रुपए के आर्थिक पैकेज की घोषणा समय-समय पर की जा चुकी है जो देश के सकल घरेलू उत्पाद का 15 प्रतिशत है।

हालांकि बेरोजगारी की दर अप्रैल/मई माह 2020 में एकदम बढ़कर 38 प्रतिशत पर पहुंच गई थी, जिसे शीघ्रता से कम करना आवश्यक था, अतः केंद्र सरकार ने सही समय पर कई आर्थिक निर्णय लिए जिसके चलते आज बेरोजगारी की दर गिरकर 8 प्रतिशत से भी नीचे आ गई है। अब तो उक्त वर्णित की गई कई नई घोषणाओं के बाद यह दर और भी नीचे आएगी, क्योंकि उक्त वर्णित आर्थिक उपायों की घोषणा के बाद ऐसी उम्मीद की जा रही है कि औपचारिक क्षेत्र में रोजगार के 50-60 लाख नए अवसर निर्मित होंगे।

मजहब और जाति, आज की राजनीति के सबसे मजबूत हथियार बन गए हैं



हिंदू धर्म ही एकमात्र ऐसा है, जो यह मानता है कि 'एकं सदविप्रा बहुधा वदन्ति' याने सत्य तो एक ही है लेकिन विद्वान उसे कई रूप में जानते हैं। इसीलिए भारत के हिंदू, जैन, बौद्ध या सिख लोगों ने धर्म-परिवर्तन के लिए कभी तीर, तलवार, तोप और तिजोरी का सहाय नहीं लिया।

अनन्य कुमार

जहां 'लव' है, वहां 'जिहाद' कैसा ? जिहाद तो दो तरह का होता है। जिहादे-अकबर और जिहादे-अशगर ! पहला, बड़ा जिहाद, जो अपने काम, क्रोध, मद, लोभ मोह के खिलाफ ईसान खुद लड़ता है और दूसरा छोटा जिहाद, जो लोग हमलावरों के खिलाफ लड़ते हैं। जहां प्रेम है, वहां जिहाद का क्या काम ? प्रेम के पैदा होते ही सारे जिहादों का याने युद्ध का अंत हो जाता है। लेकिन फिर भी भारत में यह शब्द चल पड़ा है- लव जिहाद याने प्रेमयुद्ध।

इस लव जिहाद के खिलाफ भाजपा की लगभग सभी प्रांतीय सरकारों ने जिहाद छोड़ देने की घोषणा कर दी है। वे ऐसा कानून बनाने की कोशिश कर रही हैं, जिसके तहत उन सब लोगों को कम से कम पांच साल की सजा और जुर्माना भुगतना पड़ेगा, जो किसी हिंदू लड़की को मुसलमान बनाने के लिए उससे शादी का नाटक रचाते हैं। ऐसी शादियां बलात्कार, लालच, भय और बहकावे के जरिए होती हैं। यह भी कहा जा रहा है कि इन शादियों का आयोजन विदेशी पैसे के बल पर योजनाबद्ध षड्यंत्र के तहत होता है।

यदि सचमुच ऐसा हो रहा है तो यह अनैतिक तो है ही, यह राष्ट्रविरोधी काम भी है। इसके विरुद्ध जितनी सख्ती की जाए, उतनी कम है लेकिन इधर कानपुर से आई एक ताजा सरकारी जांच रपट के मुताबिक ऐसा एक भी मामला सामने नहीं आया है, जहां धर्म-परिवर्तन के लिए विदेशी पैसा इस्तेमाल हुआ है या कोई योजनाबद्ध षड्यंत्र किया गया है। सरकार के विशेष जांच दल (एसआईटी) ने ऐसे 14 मामलों की जांच-पड़ताल के बाद यह निष्कर्ष निकाला है। 11 मामलों में उसे शादी के पहले बलात्कार के मामले जरूर मिले हैं।

लव जिहाद के ये मामले किनके बीच हो रहे हैं ? ये प्रायः मुसलमान लड़कों और हिंदू लड़कियों के बीच हो रहे हैं। लेकिन 'लव

जिहाद' शब्द चला है, केरल से। पिछले 10-11 वर्षों में केरल और कर्नाटक के पादरी शिकायत करते रहे कि लगभग 4000 ईसाई लड़कियों को जबरन मुसलमान बनाया गया है। उन्हें डरा-धमकाकर, लालच देकर या झूठ बोलकर उनका धर्म-परिवर्तन करा दिया गया है। जो काम अंग्रेज के ज़माने में विदेशी पादरी लोग मूंछों पर ताव देकर करते थे, वही आरोप उन्होंने इस्लामी मुल्ला-मौलवियों पर लगा दिया।

इस आरोप की जांच-पड़ताल सरकारी एजेंसियों ने जमकर की लेकिन उन्हें हर मामले में ऐसे प्रमाण नहीं मिले कि उन अन्तर्धार्मिक शादियों में लालच, डर या बहकावे का इस्तेमाल किया गया है। हां, कुछ इस्लामी संगठनों के ऐसे प्रमाण जरूर मिले हैं, जो बाकायदा धर्म-परिवर्तन (तगय्युर) की मुहिम चलाए हुए हैं। लेकिन यदि यहूदी और पारसियों को छोड़ दें तो ऐसा कौन-सा मजहब है, जिसके लोग अपना संख्या-बल बढ़ाने की कोशिश नहीं करते ? इसका बड़ा कारण स्पष्ट है। वे यह मानते हैं कि ईश्वर, अल्लाह, गॉड या यहोवा को प्राप्त करने का उनका मार्ग ही सर्वश्रेष्ठ और एकमात्र मार्ग है। और फिर संख्या-बल राजनीतिक वजन भी बढ़ाता है।

सिर्फ हिंदू धर्म ही एकमात्र ऐसा है, जो यह मानता है कि 'एकं सदविप्रा बहुधा वदन्ति' याने सत्य तो एक ही है लेकिन विद्वान उसे कई रूप में जानते हैं। इसीलिए भारत के हिंदू, जैन, बौद्ध या सिख लोगों ने धर्म-परिवर्तन के लिए कभी तीर, तलवार, तोप और तिजोरी का सहारा नहीं लिया। ईसा मसीह और पैगंबर मुहम्मद का ज़माना कुछ और था और अदभुत क्रांतिकारी था लेकिन उसके बाद का ईसाइयत और इस्लाम का धर्मांतरण का इतिहास काफी शोचनीय रहा है। यूरोप में लगभग एक हजार साल के इतिहास को अंधकार-युग के नाम से जाना जाता है और यदि आप भारत, अफगानिस्तान, ईरान और मध्य एशिया के मध्युगीन इतिहास को पढ़ें तो आपको पता

चलेगा कि यदि आप सूफियों को छोड़ दें तो इस्लाम जिन कारणों से भारत में फैला है, उनका इस्लाम के सिद्धांतों से कुछ लेना-देना नहीं है। भारत में ईसाइयत और अंग्रेजों की गुलामी एक ही सिक्के के दो पहलू रहे हैं। इसका तोड़ आर्य समाज ने निकाला था। 'शुद्ध आंदोलन' लेकिन वह भी अधर में लटक गया, क्योंकि मजहब पर जात भारी पड़ गई। 'घर वापसी' का भी वही हाल है।

मजहब और जाति, आज की राजनीति के सबसे मजबूत हथियार बन गए हैं। लेकिन जहां सच्चा प्रेम हो, वहां मजहब, जात, पैसा, हैसियत वगैरह के तत्व अपने आप दरी के नीचे सरक जाते हैं। दुनिया में प्रेम से बड़ा कोई मजहब नहीं है। मैं तो यह मानता हूँ कि यदि कोई भी कानून इस सच्चे प्रेम में अड़गा लगाता है तो वह अनैतिक है। ऐसा कोई भी कानून असंवैधानिक घोषित हो जाएगा, जो हिंदू और मुसलमानों पर एक-जैसा लागू नहीं होगा। कोई कानून ऐसा बने कि हिंदू लड़की मुसलमान लड़के से शादी न कर सके और इसके विपरीत मुसलमान लड़की हिंदू लड़के से शादी कर सके तो वह कानून अपने आप रद्द हो जाएगा। अमेरिका में 1960 तक गोरों और कालों के बीच शादी पर ऐसा कानून लागू होता था लेकिन वह रद्द हो गया।

हमें ऐसे सबल भारत का निर्माण करना है, जिसमें अन्तर्जातीय और अन्तर्धार्मिक परिवार पूर्ण समन्वय में रहते हों। मुझे स्वयं पिछले 50-55 वर्षों में अमेरिका, रूस, चीन, फ्रांस, ब्रिटेन, मोरिशस, अफगानिस्तान आदि देशों में ऐसे परिवारों के साथ रहने का मौका मिला है कि जिनमें हिंदू पति अपनी मुसलमान पत्नी के साथ रोज़ा रखता है और मुस्लिम पत्नी मगन होकर कृष्ण-भजन गाती है, हिंदू पति गिरजे में जाता है और उसकी अमेरिकी गोरी पत्नी मंदिर में आरती उतारती है। यदि आपके दिल में सच्चा प्रेम है तो सारे भेदभाव हवा हो जाते हैं। मंदिर, मस्जिद, गिरजे की दीवारें गिर जाती हैं और आप उस सर्वशक्तिमान को स्वतः उपलब्ध हो जाते हैं।

बढ़ते जा रहे लव जिहाद के मामलों के बीच इलाहाबाद हाईकोर्ट का फैसला बनेगा नजीर

लव जिहाद या रोमियो जिहाद, मुस्लिम पुरुषों द्वारा हिंदू समुदाय से जुड़ी महिलाओं को इस्लाम में परिवर्तन के लिए प्रेम का स्वांग रचाना है। यह हिंदू समाज की जनसंख्या को कम करने के लिए शुरू किया गया एक जिहाद है।

शादी-विवाह एक पवित्र बंधन होता है, जिसमें धर्मानुसार दो आत्माओं का मिलन होता है। जब यह रिश्ता जोड़ा जाता है तो यही उम्मीद रहती है कि पति-पत्नी हर सुख-दुख में उम्र भर एक-दूसरे का साथ निभाएंगे। ऐसे पवित्र बंधन को समाज भी मान्यता देता है, लेकिन समस्या तब आड़े आती है जब धर्म की आड़ लेकर शादी-विवाह के नाम पर अधर्म किया जाता है। शादी करने के लिए धर्म परिवर्तन तक कर लिया जाता है। यहां तक कि हिंदू धर्म की लड़की को मुसलमान बना दिया जाता है तो कुछ मामलों में शादी करने के लिए मुस्लिम लड़कियां भी अपना धर्म बदलते दिख जाती हैं, लेकिन ऐसे मामले न के बराबर होते हैं। पिछले कुछ वर्षों से हिन्दू लड़कियों का जबर्दस्ती या फिर बहला-फुसला कर धर्म परिवर्तन करने के मामले काफी बढ़ गए हैं। इस बात के कई प्रमाण हैं कि इस्लाम के नाम पर बनी कुछ संस्थाओं का काम ही यही है कि किस तरह से हिन्दू लड़कियों को बरगला कर मुस्लिम धर्म स्वीकारने और निकाह करने को मजबूर किया जाए, लेकिन इस संबंध में हाईकोर्ट का फैसला मील का पत्थर साबित हो सकता है जिसमें उसने शादी के लिए धर्म परिवर्तन को अवैध करार दिया है। इस फैसले से हिन्दुस्तान में लव जिहाद चलाने वालों के मंसूबों पर भी पानी फिर सकता है।

दरअसल, लव जिहाद या रोमियो जिहाद, मुस्लिम पुरुषों द्वारा हिंदू समुदाय से जुड़ी महिलाओं को इस्लाम में परिवर्तन के लिए प्रेम का स्वांग रचाना है। यह हिंदू समाज की जनसंख्या को कम करने के लिए शुरू किया गया एक जिहाद है। जिसका समर्थन इस्लाम करता है एवं कुरान अपनी कई आयतों में इसका वर्णन करती है। अर्थात् ये अमानवीय व्यवहार मुस्लिम पुरुष द्वारा हिन्दू धर्म की महिला के साथ प्रेम का ढोंग रचकर जबरन धर्म परिवर्तन कराने की प्रक्रिया होती है। अभी हाल ही में बल्लभगढ़ में हुआ निकिता तोमर हत्याकाण्ड इसका ताजा मामला है। इसमें निकिता तोमर का दो वर्ष पहले 2018 में अपहरण भी हुआ था किंतु पुलिस द्वारा सख्त कार्यवाही न किए जाने से एवं परिवार द्वारा ढुलमुल रवैया अपनाने से निकिता तोमर की हत्या हो गयी। यह अवधारणा 2009 में भारत में राष्ट्रीय स्तर पर पहली बार केरल और उसके बाद कर्नाटक में राष्ट्रीय ध्यानाकर्षण की ओर बढ़ी।

बहरहाल, लव जिहाद शब्द भारत के सन्दर्भ में प्रयोग किया जाता है किन्तु कथित रूप से इसी तरह की गतिविधियाँ अन्य देशों में भी होती हैं। केरल हाईकोर्ट के द्वारा दिए एक फैसले में लव जेहाद को सत्य पाया है। 02 नवंबर 2009 में पुलिस महानिदेशक जैकब पुन्नोज ने कहा था कि कोई भी ऐसा संगठन नहीं है जिसके सदस्य केरल में लड़कियों को मुस्लिम बनाने के इरादे से प्यार करते थे। दिसंबर 2009 में न्यायमूर्ति के.टी. शंकरन ने पुन्नोज की रिपोर्ट को स्वीकार करने से इंकार कर दिया और निष्कर्ष निकाला कि जबरदस्ती धर्मांतरण के संकेत हैं। अदालत ने 'लव जिहाद' मामलों में दो अभियुक्तों की जमानत याचिका पर सुनवाई करते हुए कहा कि पिछले चार वर्षों में इस तरह के 3,000-4,000 सामने आये थे।

कर्नाटक सरकार ने 2010 में कहा था कि हालांकि कई महिलाओं ने इस्लाम में धर्म परिवर्तन किया है लेकिन ऐसा करने के लिए उन्हें मनाने का कोई संगठित प्रयास नहीं किया गया। उत्तर प्रदेश पुलिस ने सितंबर 2014 में लव जिहाद के छह मामलों में से पांच में से धर्म परिवर्तन के प्रयास का कोई सबूत नहीं पाया। पुलिस ने कहा कि बेईमान पुरुषों द्वारा छल के छिटपुट मामले एक व्यापक साजिश के सबूत नहीं हैं। 2017 में केरल उच्च न्यायालय ने अपने एक फैसले में लव जिहाद के आधार पर एक मुस्लिम पुरुष से हिंदू महिला के विवाह को अमान्य घोषित किया। तब मुस्लिम पति द्वारा भारत के सर्वोच्च न्यायालय में एक अपील दायर की गई थी, जहां अदालत ने लव जिहाद के पैटर्न की स्थापना के लिए सभी समान मामलों की जांच करने के लिए एनआईए को निर्देश दिया।

लव जिहाद की अवधारणा पहली बार 2009 में केरल और कर्नाटक में व्यापक धर्मांतरण के दावों के साथ भारत में राष्ट्रीय स्तर पर सुर्खियों में आई। लेकिन ऐसे दावे बाद में पूरे भारत, पाकिस्तान और यूनाइटेड किंगडम में फैल गए। 2009, 2010, 2011 और 2014 में भारत में लव जिहाद के आरोपों ने विभिन्न हिन्दू, सिख और ईसाई संगठनों में चिंता जताई जबकि मुस्लिम संगठनों ने आरोपों से इंकार किया। यह अवधारणा कई लोगों के लिए राजनीतिक विवाद और सामाजिक चिंता का स्रोत बनी हुई है हालांकि 2014 तक किसी संगठित लव जिहाद के विचार को भारतीय मुख्यधारा द्वारा व्यापक रूप से साजिश सिद्धांत के रूप में नहीं माना गया था।

अब इलाहाबाद हाई कोर्ट ने बड़ा फैसला देते हुए न केवल शादी के लिए धर्म परिवर्तन को अवैध करार दिया है बल्कि दो अलग धर्म के जोड़े की याचिका को खारिज करते हुए कोर्ट ने कुरान का जिक्र करते हुए यहां तक कह दिया कि इस्लाम में बिना आस्था और विश्वास के केवल शादी करने के उद्देश्य से धर्म बदलना स्वीकार्य नहीं है। यह इस्लाम के खिलाफ है। कोर्ट ने नूर जहां बेगम केस के फैसले का हवाला दिया, जिसमें कोर्ट ने कहा कि शादी के लिए धर्म बदलना स्वीकार्य नहीं है। इस केस में हिन्दू लड़की ने धर्म बदल कर मुस्लिम लड़के से शादी की थी। इसी फैसले के हवाले से कोर्ट ने मुस्लिम से हिंदू बनकर शादी करने वाली याचिकाकर्ता को राहत देने से इंकार कर दिया।

कटहर स्टोरी

“शाहीन बाग” के जैसा नजर आ रहा है

पंजाब के किसानों का आंदोलन



-राकेश सैन

राजनीतिक दल समस्या हल करने की बजाय बयानबाजी करके इसे और उलझाते जा रहे हैं। चूंकि पंजाब में लगभग एक साल बाद विधानसभा चुनावों का बिगुल बज जाना है, इसलिए कोई भी इस आंदोलन का लाभ लेने से पीछे हटने के लिए तैयार दिखाई नहीं दे रहा है।

पिछले साल नागरिकता संशोधन अधिनियम (सी.ए.ए.) को लेकर हुए शाहीन बाग आंदोलन और केंद्र सरकार द्वारा पारित कृषि सुधार अधिनियम को लेकर पंजाब सहित उत्तर भारत के कुछ हिस्सों में हो रहे किसान आंदोलन के बीच की समानता को उर्दू शायर फैज के शब्दों में यूँ बयां किया जा सकता है कि-‘वो बात सारे फसाने में जिसका जिक्र न था, वो बात उनको बहुत नागवार गुजरी है।’ सीएए में देश के किसी नागरिक का जिक्र न था परंतु भ्रम फैलाने वालों ने इसे मुसलमानों का विरोधी बताया और भोले-भाले लोगों को सड़कों पर उतार दिया। अब उसी तर्ज पर कृषि सुधार अधिनियम को लेकर भ्रम फैलाया जा रहा है, इसमें न तो फसलों के न्यूनतम समर्थन मूल्य (एम.एस.पी.) को समाप्त करने की बात कही गई है और न ही मंडी व्यवस्था खत्म करने की परंतु इसके बावजूद आंदोलनकारी इस मुद्दे को जीवन मरण का प्रश्न बनाए हुए हैं।

अधिनियम के अस्तित्व में आने के बाद से ही पंजाब में चला आ रहा किसान आंदोलन बीच में मद्धम पड़ने के बाद किसानों के ‘दिल्ली चलो’ के आह्वान के बाद फिर जोर पकड़ रहा है। जैसी आशंका जताई जा रही थी वही हुआ, आंदोलन के चलते पिछले लगभग दो महीनों से परेशान चले आ रहे लोगों को किसानों के अडियल रवैये से मुश्किलें और बढ़ गई हैं। आंदोलनकारियों को सीमा पर रोके जाने के बाद हरियाणा पुलिस से किसानों की कई जगह झड़प हुई। ज्यादातर जगहों पर किसानों को रोकने की तमाम कोशिशें बेकार साबित हुईं। लंबे जाम और किसानों के आक्रामक रुख को देखते हुए पुलिस ने ज्यादा सख्ती नहीं की और उन्हें आगे बढ़ने दिया, लेकिन संग्रूर के खनौरी और बटिंडा के डबवाली बैरियर पर किसान हरियाणा में प्रवेश नहीं कर सके। इन दोनों जगहों पर किसानों ने सड़क पर धरना लगा दिया। साफ-सी बात है कि आने वाले दिनों में आम लोगों की परेशानी और बढ़ने वाली है, क्योंकि किसान पूरी तैयारी के साथ दोनों जगहों पर डटे हैं। उनकी संख्या भी हजारों में है। चाहे कुछ मार्गों पर रेल यातायात कुछ शुरू हुआ है परंतु यह पूरी तरह बहाल नहीं हो पाया है। अब सड़क मार्ग भी बाधित होने के कारण समस्या और बढ़ गई है। इसके साथ ही सरकार और किसानों के बीच टकराव भी बढ़ता जा रहा है। इसके पीछे राजनीति भी कम जिम्मेदार नहीं है। राजनीतिक दल समस्या हल करने की बजाय बयानबाजी करके इसे और उलझाते जा रहे हैं। किसानों को अलग-अलग राजनीतिक दलों का समर्थन हासिल है। चूंकि पंजाब में लगभग एक साल बाद विधानसभा चुनावों का बिगुल बज जाना है, इसलिए कोई भी इस आंदोलन का लाभ लेने से पीछे हटने के लिए तैयार दिखाई नहीं दे रहा है।

केंद्र सरकार द्वारा लाए गए तीन कृषि कानूनों को लेकर जो विरोध हो रहा है वह साधारण लोगों के लिए तो क्या कृषि विशेषज्ञों व प्रगतिशील किसानों के लिए भी समझ से बाहर की बात है। कुछ राजनीतिक दल व विघ्नसंतोषी शक्तियां अपने निजी स्वार्थों के लिए किसानों को भड़का कर न केवल अपना उल्लू सीधा कर रहे हैं बल्कि ऐसा करके वह किसानों का बड़ा नुकसान भी करने जा रहे हैं। कितना हास्यास्पद है कि पंजाब के राजनीतिक दल उन्हीं कानूनों का विरोध कर रहे हैं जो राज्य में पहले से ही मौजूद हैं और उनकी ही सरकारों के समय में इन कानूनों को लागू किया गया था। इन कानूनों को लागू करते समय इन दलों ने इन्हें किसान हितैषी बताया था और आज वे किसानों के नाम

पर ही इसका विरोध कर रहे हैं। पंजाब के मुख्यमंत्री कैप्टन अमरिंदर सिंह किसानों के इसी आक्रोश का राजनीतिक लाभ उठाने के उद्देश्य से पंजाब विधानसभा में केंद्र के कृषि कानूनों को निरस्त भी कर चुके हैं और अपनी ओर से नए कानून भी पारित करवा चुके परंतु उनका यह दांवपेंच असफल हो गया क्योंकि प्रदर्शनकारी किसानों ने पंजाब सरकार के कृषि कानूनों को भी अस्वीकार कर दिया है।

संघर्ष के पीछे की राजनीति समझने के लिए हमें वर्ष 2006 में जाना होगा। उस समय पंजाब में कांग्रेस सरकार ने कृषि उत्पाद मंडी अधिनियम (एग्रीकल्चरल प्रोड्यूस मार्केट एमेंडमेंट एक्ट) के जरिए राज्य में निजी कंपनियों को खरीददारी की अनुमति दी थी। कानून में निजी यादों को भी अनुमति मिली थी। किसानों को भी छूट दी गई कि वह कहीं भी अपने उत्पाद बेच सकता है। साल 2019 के आम चुनावों में कांग्रेस ने अपने चुनावी घोषणापत्र में इन्हीं प्रकार के कानून बनाने का वायदा किया था जिसका वह आज विरोध कर रही है। अब चलते हैं साल 2013 में, जब राज्य में अकाली दल बादल व भारतीय जनता पार्टी गठजोड़ की स. प्रकाश सिंह बादल के नेतृत्व में सरकार सत्तारूढ़ थी। बादल सरकार ने इस दौरान अनुबंध कृषि (कांटेक्ट फार्मिंग) की अनुमति देते हुए कानून बनाया। कृषि विशेषज्ञ और अर्थशास्त्री स. सरदारा सिंह जौहल अब पूछते हैं कि अब जब केंद्र ने इन दोनों कानूनों को मिला कर नया कानून बनाया है तो कांग्रेस व अकाली दल इसका विरोध किस आधार पर कर रहे हैं।

पंजाब में चल रहे कथित किसान आंदोलन का संचालन अढ़ाई दर्जन से अधिक किसान यूनियनों कर रही हैं। कहने को तो भारतीय किसान यूनियन किसानों के संगठन

संघर्ष के पीछे की राजनीति समझने के लिए हमें वर्ष 2006 में जाना होगा। उस समय पंजाब में कांग्रेस सरकार ने कृषि उत्पाद मंडी अधिनियम (एग्रीकल्चरल प्रोड्यूस मार्केट एमेंडमेंट एक्ट) के जरिए राज्य में निजी कंपनियों को खरीददारी की अनुमति दी थी। कानून में निजी यादों को भी अनुमति मिली थी। किसानों को भी छूट दी गई कि वह कहीं भी अपने उत्पाद बेच सकता है। साल 2019 के आम चुनावों में कांग्रेस ने अपने चुनावी घोषणापत्र में इन्हीं प्रकार के कानून बनाने का वायदा किया था जिसका वह आज विरोध कर रही है। अब चलते हैं साल 2013 में, जब राज्य में अकाली दल बादल व भारतीय जनता पार्टी गठजोड़ की स. प्रकाश सिंह बादल के नेतृत्व में सरकार सत्तारूढ़ थी। बादल सरकार ने इस दौरान अनुबंध कृषि (कांटेक्ट फार्मिंग) की अनुमति देते हुए कानून बनाया।

हैं परंतु इनकी वामपंथी सोच जगजाहिर है। दिल्ली में चले शाहीन बाग आंदोलन में किसान यूनियन के लोग हिस्सा ले चुके हैं, केवल इतना ही नहीं देश में जब भी नक्सली घटना या दुर्घटना घटती है तो भारतीय किसान यूनियन इस पर अपना समर्थन या विरोध प्रकट करती हैं। इस किसान आंदोलन को भड़काने के लिए गीतकारों से जो गीत गवाए जा रहे हैं उनकी भाषा विशुद्ध रूप से विषाक्त नक्सलवादी चाशनी से लिपटी हुई है। ऊपर से रही सही कसर खालिस्तानियों व कट्टरवादियों ने पूरी कर दी। प्रदेश में चल रहे कथित किसान आंदोलन में कई स्थानों पर खालिस्तान को लेकर भी नारेबाजी हो चुकी है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर एक नहीं बल्कि भारी संख्या में पेज ऐसे चल रहे हैं जो इस आंदोलन को खालिस्तान से जोड़ कर देख रहे हैं और युवाओं को भटकाने का काम कर रहे हैं।

सच्चाई तो यह है कि केंद्र के नए कृषि अधिनियम अंततः किसानों के लिए लाभकारी साबित होने वाले हैं। इनके अंतर्गत ऑनलाइन मार्केट भी लाई गई है, जिसमें किसान अपनी फसल को इसके माध्यम से कहीं भी अपनी मर्जी से बेच सकेगा। इस कानून में राज्य सरकारों को भी अनुमति दी गई है कि वह सोसायटी बना कर माल की खरीददारी कर सकती हैं और आगे बेच भी सकती हैं। पंजाब में सहकारी क्षेत्र के वेरका मिल्क प्लांट इसके उदाहरण हैं। नए कानून के अनुसार, किसानों व खरीददारों में कोई झगड़ा होता है तो उपमंडल अधिकारी को एक निश्चित अवधि में इसका निपटारा करवाना होगा। इससे किसान अदालतों के चक्कर काटने से बचेगा। हैरत की बात यह है कि किसानों को नए कानून के इस लाभ के बारे में कोई भी नहीं जानकारी दे रहा। एक और हैरान करने वाला तथ्य है कि केंद्र सरकार ने हाल ही में पंजाब में धान की खरीद न्यूनतम समर्थन मूल्य के आधार पर की है परंतु इसके बावजूद एमएसपी को लेकर प्रदर्शनकारियों में धुंधलका छंटने का नाम नहीं ले रहा और उन बातों को लेकर विरोध हो रहा है जिनका जिक्र तक नए कृषि कानूनों में नहीं है।

कांग्रेस ने पंजाब में जो दाँव चला, अब वह राज्य की अर्थव्यवस्था पर भारी पड़ने लगा है

राजेश मेहता

न्यायालय ने किसानों द्वारा दिए जा रहे धरनों व कई दिनों से रोके जा रहे रेल मार्गों पर दायर एक याचिका पर कड़ी टिप्पणी की। पंजाब सरकार की तरफ से न्यायालय को बताया गया कि लगभग सभी रेल मार्ग खाली कर दिए गए हैं। हालांकि स्थिति इससे विपरीत है।

मुल्ला जी ने नदी में तैरते हुए रीछ को कंबल समझ कर बगलों में भर लिया, अब मुल्ला जी तो छोड़े पर मुआ रीछ न छोड़े। यही हालत है पंजाब सरकार की, राजनीतिक लाभ के लिए केंद्र में कृषि सुधार कानूनों के खिलाफ किसान आंदोलन को खाद पानी देने वाली मुख्यमंत्री कैप्टन अमरिंदर सिंह की सरकार फंसी-फंसी-सी नजर आने लगी है। पंजाब-हरियाणा उच्च न्यायालय जहां राज्य सरकार को फटकार पर फटकार लगा रहा है वहीं राज्य में कृषि, व्यापार, उद्योग, छोटे दुकानदारों, दिहाड़ी दारों, मजदूरों का बुरा हाल हो रहा है। आम उपभोग की वस्तुओं के दाम आसमान छूते जा रहे हैं।

28 अक्तूबर को पंजाब एवं हरियाणा उच्च न्यायालय ने किसान आंदोलन के कारण रेल व सड़क मार्ग रोके जाने के पर पंजाब सरकार के खिलाफ बेहद कड़ी टिप्पणी की है कि अगर पंजाब सरकार कानून व्यवस्था संभालने में नाकाम है तो न्यायालय इस मामले में आदेश पारित करे। क्यों न न्यायालय आदेश जारी करते हुए यह लिख दे कि पंजाब सरकार संविधान के अनुसार चलने में नाकाम है। न्यायालय ने किसानों द्वारा दिए जा रहे धरनों व कई दिनों से रोके जा रहे रेल मार्गों पर दायर एक याचिका पर ये टिप्पणी की। पंजाब सरकार की तरफ से न्यायालय को बताया गया कि लगभग सभी रेल मार्ग खाली कर दिए गए हैं। केंद्र सरकार के वकील सत्यपाल जैन ने कहा कि पंजाब में अब भी चार रेलवे ट्रैक और 29 रेलवे प्लेटफार्म आंदोलनकारी किसानों के कब्जे में हैं। पंजाब सरकार लगातार केंद्र पर आरोप लगा रही है कि केंद्र सरकार मालगाड़ियां नहीं चला रही।

सबसे रोचक बात तो यह है कि किसान आंदोलन का सबसे बुरा असर खुद किसानों पर ही पड़ता दिख रहा है। पंजाब के गुरदासपुर व अमृतसर सहित कई जिलों में किसान बासमती का प्रमुखता से उत्पादन करते हैं। पिछली बार राज्य में 25 लाख टन बासमती की पैदावार हुई जिसकी कीमत 6500 करोड़ रुपये बनती है। राज्य के निर्यातक बासमती को विदेशों में निर्यात करते हैं। अबकी बार मालगाड़ियां रुकने से निर्यात का यह काम बिल्कुल बंद पड़ा है। बासमती की जो किस्में आरएस-10, सगोधा, सरबती, सोना मसूरी आदि पंजाब में पैदा नहीं होतीं निर्यातक उन्हें पड़ोसी राज्यों से मंगवाते हैं और उसके बाद यहां से निर्यात करते हैं। अबकी बार बाहर से आ रही बासमती को यह कह कर रोका जा रहा है कि पड़ोसी राज्यों के किसान व व्यापारी वहां से सस्ता धान खरीद कर पंजाब में न्यूनतम समर्थन मूल्य पर धान बेच रहे हैं। पंजाब के बासमती निर्यातकों ने इसके खिलाफ हड़ताल भी शुरू कर दी है। मालगाड़ियां यूं ही बंद रहें तो तापघरों में कोयला खत्म होने की स्थिति आ सकती है और कई तापघरों में तो कुछ दिनों का ही कोयले का भंडार शेष बचा है। राज्य सरकार किसी न किसी तरह सैंट्रल ग्रिड से बिजली लेकर काम चला रही है परंतु इस व्यवस्था को लंबे समय तक नहीं चलाया जा सकता।

किसानों के आंदोलन के चलते उद्योग जगत की रीढ़ टूटती जा रही है। कच्चे माल की आपूर्ति में देरी से उद्यमियों पर भारी जुमाने का संकट मंडरा रहा है। आयातित कच्चे माल पर आधारित उद्योगों में उत्पादन बुरी तरह प्रभावित हो रहा है। चैंबर आफ इंडस्ट्रियल एंड कमर्शियल अंडरटेकिंग्स की बैठक में यह मुद्दा प्रमुखता से उठा। उद्यमियों ने साफ किया कि उन्हें भारी आर्थिक नुकसान उठाना पड़ रहा है। आयात-निर्यात बंद हो गया है। कच्चे माल की भारी कमी हो रही है। इकाइयां बंद होने की कगार पर हैं। दूसरी तरफ शिपिंग कंपनियां भी उद्यमियों पर शिकंजा कसने की तैयारी में हैं। मालगाड़ियां न चलने से कंटेनर डिपो में कामकाज नहीं हो रहा है। उद्यमी गुजरात व मुंबई पोर्ट तक सड़क मार्ग से माल भेजने को मजबूर हैं। ढुलाई की लागत दोगुना हो रही है। रेलें बंद होने के कारण जालंधर में आयात-निर्यात ठप होने से



औद्योगिक उत्पादन 50 प्रतिशत कम हो गया है। जालंधर में लगभग तीन हजार कंटेनर फंसे हैं। इंजीनियरिंग एक्सपोर्ट प्रमोशन काउंसिल के डिप्टी रीजनल डायरेक्टर

उपेंद्र सिंह कहते हैं कि पहले कोरोना की वजह से इंडस्ट्री बंद रही और अब रेल रोको आंदोलन की वजह से कच्चा माल नहीं आ रहा है। व्यापारियों पर दोहरी

किसान नेता राकेश टिकैत ने कहा-

इस बार आर पार की लड़ाई है

“नरेंद्र मोदी को एक बात नहीं भूलनी चाहिए। 2014 और 2019 में उनकी जीत में किसानों की भूमिका सबसे बड़ी रही। उसके बदले सरकार ने किसानों को सिर्फ कोरे आश्वासनों के अलावा कुछ नहीं दिया। फसली समर्थन मूल्य में बढ़ोतरी की बात में भी बेमानी दिखी।”

देश की राजधानी बीते कुछ दिनों से किसानों से घिरी है। खेती-किसानी छोड़ अन्नदाता इस समय दिल्ली में डेरा डाले हुए हैं। आंदोलन केंद्र सरकार द्वारा पारित कृषि सुधार अधिनियम के खिलाफ हो रहा है जिसमें पंजाब सहित उत्तर भारत के लाखों किसान शामिल हैं। जनाक्रोश को देखते हुए केंद्र सरकार ने फिलहाल बातचीत का पासा फेंका है। किसानों के दिल्ली कूच करने और उनकी क्या हैं मांगे आदि को जानने के लिए डॉ रमेश ठाकुर ने भारतीय किसान यूनियन के नेता राकेश टिकैत से विस्तृत बातचीत की। पेश हैं बातचीत के मुख्य अंश।

प्रश्न- इस बार का मूवमेंट आर-पार की लड़ाई में दिखाई पड़ता है?

उत्तर- जी बिल्कुल! अब आश्वासन का झुनझुना नहीं चाहिए हमें। मुकम्मल लिखित जवाब चाहिए। ये आंदोलन नहीं, बल्कि किसान क्रांति है। दिल्ली बॉर्डर पर हमारा काफिला पहुंचा तो पता चला कि हमें रोकने के लिए चारो ओर से पुलिस-आर्मी का पहरा बिछा दिया। लेकिन अबकी बार हम मरने से भी पीछे नहीं हटेंगे। सर्दी में हम पर वाटर कैनन से भिंगोया गया, आंसू गैस के गोले दागे गए, पानी की बौछारें छोड़ी गईं। किसानों पर लाठियां तक भांजी गईं। शर्म आनी चाहिए केंद्र सरकार को हम किसान हैं, कोई आतंकवादी नहीं। हम अपना हक-हकूक मांग रहे हैं, आपसे दुआ या भीख नहीं? मोदी जी इतना समझ लेना इस बार हम खाली हाथ दिल्ली से नहीं लौटेंगे।

प्रश्न- मांगों के एजेंडे में नए कृषि सुधार अधिनियम ही हैं या कुछ और?

उत्तर- पहली बात तो ये है कि केंद्र सरकार द्वारा पारित तीनों नए कृषि सुधार अधिनियम को हम लागू नहीं होने देंगे। क्योंकि इससे किसान निश्चित रूप से उजड़ जाएंगे, खेतीविहीन हो जाएंगे। सड़कों पर आ जाएंगे। दूसरी

मांग है स्वामी नाथन आयोग की सिफारिशें लागू करना। जिस पर सरकार ने विचार करने का पिछले साल हमें आश्वासन दिया था। उस समय मांग को पूरा करने के लिए केंद्र सरकार ने थोड़ा समय मांगा था। लेकिन अब मियाद खत्म हो गई है। सरकार अपने वादे से मुकर गई। इन्हीं मांगों को पूरा करने के लिए हमारा आंदोलन हो रहा है।

प्रश्न- ये पांचवां बड़ा आंदोलन है, पूर्व की तरह सरकार ने फिर बातचीत का पासा फेंका है?

उत्तर- अब हम झांसे में नहीं आने वाले। किसानों ने पटकथा आर-पार की लिख दी है। सरकार के पास इस बार आखिरी मौका है। इस बार अगर सरकार ने पलटी मारी, तो देख लेना अन्नदाता किस तरह से सबक सिखाएंगे। नरेंद्र मोदी को एक बात नहीं भूलनी चाहिए। 2014 और 2019 में उनकी जीत में किसानों की भूमिका सबसे बड़ी रही। उसके बदले सरकार ने किसानों को सिर्फ कोरे आश्वासनों के अलावा कुछ नहीं दिया। फसली समर्थन मूल्य में बढ़ोतरी की बात में भी बेमानी दिखी। दिल्ली का तख्ता पलटने में किसान अब देरी नहीं करेगा। किसानों का गुस्सा अब अपनी चरम सीमा को पार कर चुका है। हमें आश्वासन का झुनझुना नहीं चाहिए। अन्नदाताओं को अपनी किसानी का मेहनताना चाहिए।

प्रश्न- आंदोलन को खालिस्तान से जोड़ा जा रहा है?

उत्तर- खालिस्तान आतंकी हैं जो गतिविधियों में लिप्त रहते हैं। ये अन्नदाता हैं जो आपका पेट भरते हैं। शर्म आनी चाहिए उन लोगों को जो इनके दामन पर दाग लगाते हैं। पूरा मूवमेंट अहिंसक तरीके से हो रहा है। आंदोलित किसानों को हिदासतें दी गई हैं कि वह किसी भी सुरक्षाकर्मी से न उलझें। देखिए, वातानुकूलित कमरों में बैठकर किसानों की असल समस्याओं को नहीं समझ सकते। समझने के लिए खेतों में उतरना होगा। लेकिन

मार पड़ रही है। चमड़ा उद्योग पूरी तरह बंद है। हैंड टूल निर्यात का भी सारा माल अटक गया है।

किसानों के भड़का कर राजनीतिक लाभ लेने का कांग्रेस सरकार का दांव उलटा पड़ना शुरू हो चुका है। मुख्यमंत्री को उम्मीद थी कि वे राजनीतिक तिकड़मबाजी कर मौके का लाभ उठा लेंगे। उन्होंने इसका भरपूर प्रयास भी किया, कांग्रेस पार्टी ने किसानों के बंद का न केवल पूरा समर्थन किया बल्कि इसके लिए सरकारी ताकत भी झोंक दी। इसके लिए विधानसभा का विशेष सत्र बुलाया गया और केंद्रीय कृषि कानूनों में संशोधन पेश कर नए कानूनों के प्रस्ताव पास करवाए गए। मुख्यमंत्री को उम्मीद थी कि इसके बाद धरनों पर बैठे किसान अपने घरों को लौट जाएंगे परंतु ऐसा नहीं हुआ। राज्य में अभी भी किसानों का धरना व कई स्थानों पर रेल रोको आंदोलन जारी है। इससे राज्य की आर्थिकी चरमराने की ओर बढ़ने लगी है।

दूसरी ओर किसान आंदोलनों में जुटने वाले चेहरों को लेकर राज्य की जनता के भी कान खड़े होते जा रहे हैं और इस आंदोलन को जनसमर्थन निरंतर कम हो रहा है। किसान आंदोलनों के दौरान कई स्थानों पर खालिस्तानी झंडे फहराने व खालिस्तान के पक्ष में भाषणबाजी के भी समाचार मिल रहे हैं। केवल इतना ही नहीं आंदोलनों के मंचों पर जुटने वाले नक्सलवादी नेताओं से जनता सतर्क होती जा रही है। लोग मानने लगे हैं कि किसानों की आड़ में उग्र वामपंथ अपनी जड़ें तलाशता दिख रहा है। रोज-रोज बढ़ रही परेशानियों ने आम लोगों में आंदोलन के प्रति आक्रोश बढ़ता दिख रहा है जिसका खमियाजा सत्तारुढ़ कांग्रेस पार्टी को उठाना पड़ सकता है। ऐसा नहीं है कि मुख्यमंत्री इस खतरे को पहचानते नहीं, अगर ऐसा न होता तो वे किसानों को आंदोलन वापिस लेने की अपील न कर रहे होते परंतु बात वहीं आकर खत्म होती है कि मुल्ला जी तो छोड़ना चाहें पर रीछ न छोड़े।



ऐसा सफेदपोश कर नहीं सकते, उससे उनके सफेद कपड़े मैले हो जाएंगे। आजादी के बाद से किसान इस वक्त सबसे बड़ी समस्याओं से गुजर रहे हैं। मंडियों में धान की बिक्री नहीं हो रही। किसान मारे-मारे फिर रहे हैं। शासन-प्रशासन सभी आँखें मूंदे हैं।

प्रश्न- सूचना ऐसी भी है कि मौजूद किसान आंदोलन में कुछ स्वार्थी तत्व भी शामिल हैं?

उत्तर- ये दुष्प्रचार मात्र है। आंदोलन में जितने भी संगठन शामिल हैं सभी खादी के किसान हैं। मेरे पिता जी महेंद्र सिंह टिकैत ने किसानों के हितों के लिए कितना संघर्ष किया। अन्नदाताओं की लड़ाई लड़ते-लड़ते अपने प्राण न्योछावर कर दिए। देश के किसान उनकी कुर्बानी को कभी नहीं भूल पाएंगे। हमारे भीतर भी उनका ही खून है। इसलिए आखिरी दम तक हम भारत के किसानों हितों के लिए निस्वार्थ लड़ते रहेंगे।

प्रश्न- उम्मीद है आपको, केंद्र सरकार इस बार मांगों मान लेगी?

उत्तर- हर हाल में मानना पड़ेगा। वरना खामियाजा भुगतने की लिए तैयार रहें। तख्त ताज उखाड़ फेंक देंगे। किसानों ने अपनी मांगें मनवाने का ब्लू प्रिंट तैयार किया हुआ है। इसके बाद समूचे भारत में किसान क्रांति आ जाएगी। दूध, सब्जी-राशन के अलावा ग्रामीण अंचल की सभी सामग्रियों की सप्लाई बंद कर देंगे। ऐसा करने के बाद देश में जो अराजकता फैलेगी, उसकी जिम्मेदार सिर्फ और सिर्फ केंद्र सरकार होगी। दिल्ली इस बार हम आर-पार की लड़ाई लड़ने पहुंचे हैं। खाली हाथ नहीं जाएंगे। हमें पता है आंदोलन को खत्म करने के लिए कोशिशें हो रही हैं। लेकिन हम डटे हैं, दिल्ली छोड़कर नहीं जाएंगे। -फोन पर किसान नेता राकेश टिकैत ने जैसा डॉ. रमेश ठाकुर से कहा।

हार को नियति मान लिया है कांग्रेस ने नेतृत्व से आत्मविश्लेषण की उम्मीद करना बेकार

शैल कुमर शुभे

कांग्रेस नेतृत्व ने शायद हर चुनाव में पराजय को ही अपनी नियति मान लिया है। यह बात कांग्रेस के विरोधी राजनीतिक दल नहीं बल्कि खुद पार्टी के वरिष्ठ नेता कह रहे हैं। पूर्व केंद्रीय मंत्री और कांग्रेस के वरिष्ठ नेता कपिल सिब्बल ने एक साक्षात्कार में बिहार विधानसभा चुनावों में कांग्रेस की करारी पराजय पर टिप्पणी करते हुए कहा है कि ऐसा लगता है कि पार्टी नेतृत्व ने शायद हर चुनाव में पराजय को ही अपनी नियति मान लिया है। उन्होंने यह भी कहा कि बिहार ही नहीं, उपचुनावों के नतीजों से भी ऐसा लग रहा है कि देश के लोग कांग्रेस पार्टी को प्रभावी विकल्प नहीं मान रहे हैं। यही नहीं कपिल सिब्बल के इस

लेकर भी अटक गयी है। हालिया कुछ राज्य विधानसभा चुनावों की बात कर लें तो ऐसे लोगों को प्रभारी बनाकर भेज दिया जाता है जो अपने अड़ियल रवैये के कारण राज्य के नेताओं को भरोसे में नहीं लेते। सिर्फ अपनी चलाते हैं और जैसे ही चुनाव परिणाम कांग्रेस को चलता कर देते हैं यह प्रभारी लोग भी वापस दिल्ली को चल देते हैं। अचम्भे की बात यह है कि ऐसे प्रभारियों को कांग्रेस में लगातार तरक्की भी मिल रही है जोकि पार्टी को पलीता लगाने में जुटे हुए हैं। क्या कांग्रेस में जनाधार वाले नेताओं की कोई पूछ है? यह सवाल जरा एक बार जनाधार वाले नेताओं से करके देखिये वह ऑफ द रिकॉर्ड अपने साथ हो रहे

में चंद्रबाबू नायडू की तेदेपा बर्बाद हो गयी। कांग्रेस की वजह से कर्नाटक में जनता दल सेक्युलर की सरकार चली गयी। देश के अन्य राज्यों में भी आंकड़ों पर गौर करेंगे तो पता चल जायेगा कि देश की ग्रैंड ओल्ड पार्टी का क्या हाल है। कांग्रेस के नेताओं में पार्टी छोड़ने की होड़ लगी है, विधायक हों या सांसद अब कांग्रेस के प्रति वफादार नहीं रह गये हैं और पाला बदलने के लिए मौका देखते रहते हैं, ऐसी स्थिति में आम कार्यकर्ता आलाकमान की ओर आशा भरी उम्मीदों से देख रहा है लेकिन आलाकमान अगली पिकनिक कहाँ मनाएँ इस बात की सोच रहा है। खबर तो यह भी रही कि बिहार की हार के बाद कांग्रेस



कांग्रेस का आलाकमान तो सिर्फ इसी बात पर चिंतन मनन करता रहा है कि कैसे पार्टी की कमान को अपने परिवार तक ही सीमित रखा जाये। कांग्रेस का आलाकमान तो सिर्फ इसी बात का चिंतन मनन करता रहा है कि इस बार छुट्टियों में कहाँ चला जाये।

साक्षात्कार को रिव्यू कर रहे हुए कांग्रेस सांसद कार्ति चिदम्बरम ने कहा है कि यह आत्मविश्लेषण, चिंतन और विचार-विमर्श करने का समय है। लेकिन सवाल यह है कि क्या कांग्रेस आत्मविश्लेषण करेगी? क्या कांग्रेस हार पर चिंतन या विचार-विमर्श करेगी?

कांग्रेस का आलाकमान तो सिर्फ इसी बात पर चिंतन मनन करता रहा है कि कैसे पार्टी की कमान को अपने परिवार तक ही सीमित रखा जाये। कांग्रेस का आलाकमान तो सिर्फ इसी बात का चिंतन मनन करता रहा है कि इस बार छुट्टियों में कहाँ चला जाये। भले कोई विधानसभा चुनाव हो रहे हों, भले लोकसभा चुनाव हो रहे हों, भले संसद का सत्र चल रहा हो, भले पार्टी के सामने कोई विकट समस्या आकर खड़ी हो गयी हो लेकिन कांग्रेस आलाकमान की पिकनिक में कोई विघ्न नहीं आना चाहिए। छुट्टियों में मौज मस्ती करो, समय मिल जाये तो ट्विटर पर राहुल गांधी मोदी को घेर लें और प्रियंका गांधी योगी को घेर लें, बस हो गया विपक्ष की भूमिका का निर्वहन।

कांग्रेस सिर्फ अपने सिद्धांतों और विचारधारा से ही नहीं भटक गयी है बल्कि किस चुनाव में किन मुद्दों को लेकर आगे जाना है इसको

अन्याय की लंबी कहानी सुनाने लग जायेंगे। कांग्रेस का शीर्ष नेतृत्व पिकनिक खूब मनाता है और राजनीतिक पर्यटन भी उन्हें खूब भाता है। हाथरस मामले को लेकर सड़क पर उतरे राहुल और प्रियंका अब इस मामले को भुला चुके हैं और उन्हें यह भी पता लग गया होगा कि कैसे जनता ने उत्तर प्रदेश विधानसभा उपचुनावों में कांग्रेस का सारा घर्मंड चूर-चूर कर दिया है। दरअसल कांग्रेस के शीर्ष नेतृत्व की दिक्कत यह है कि राहुल और प्रियंका अनुभवी नेताओं की बात सुनना छोड़ चुके हैं, उन्हें लगता है कि जो लोग भी उन्हें सही सलाह दे रहे हैं वह गांधी परिवार के खिलाफ हैं। यही कारण है कि वरिष्ठ नेताओं से विमर्श किये बिना राहुल और प्रियंका जिन मुद्दों का चयन करते हैं और चुनावों के दौरान जो मुद्दे उठाते हैं उससे लगातार पार्टी को भारी नुकसान उठाना पड़ रहा है।

यही कारण है कि भाजपा को कहने का मौका मिल गया है कि कांग्रेस जिसे छूती है वह बर्बाद हो जाता है। अब भाजपा की जरा इस बात में कितना दम है यह भी देख लीजिये। कांग्रेस ने उत्तर प्रदेश में समाजवादी पार्टी से गठबंधन किया, सपा बर्बाद हो गयी। बिहार में कांग्रेस की वजह से राष्ट्रीय जनता दल का सरकार बनाने का सपना चकनाचूर हो गया। कांग्रेस की वजह से तेलंगाना और आंध्र प्रदेश

के उन 23 नेताओं की एक और बैठक हुई जिन्होंने आलाकमान को अगस्त महीने में एक पत्र लिख कर पूर्णकालिक अध्यक्ष बनाने की माँग की थी। लेकिन इस बैठक से ज्यादा कुछ निकल कर नहीं आया क्योंकि इन नेताओं को पिछली बार का हथ्रस याद था जब इन्हें गद्दार और भाजपा एजेंट तक कह दिया गया था।

बहरहाल, बिहार विधानसभा चुनाव परिणाम के बाद जिस तरह आरजेडी के नेता कांग्रेस को घेरने में लगे हुए हैं उस पर कांग्रेस पलटवार भले कर दे लेकिन पार्टी को यह सोचना ही होगा कि वह देश में गंभीर राजनीति करना चाहती है या नहीं। हम होते तो 15 मिनट में चीन को बाहर कर देते, हम होते तो यह कर देते वह कर देते...जैसे बयान विश्वविद्यालय के छात्र संघ चुनावों में तो काम कर सकते हैं लेकिन विधानसभा और लोकसभा चुनावों में मुद्दे अलग होते हैं यह बात कांग्रेस के शीर्ष नेतृत्व को समझनी ही होगी। आरोप-प्रत्यारोप की राजनीति से बाहर निकल कर कांग्रेस को अपने विजन को प्रस्तुत करना चाहिए और देश की जनता को समय देना चाहिए कि वह उसके दृष्टिकोण या नीतियों पर विचार कर फैसला करे। लेकिन कांग्रेस के वर्तमान नेतृत्व से इस बात की उम्मीद कम ही है। भाजपा का नारा है- मोदी है तो मुमकिन है। कांग्रेस का नारा होना चाहिए- राहुल है तो नामुमकिन है।

कांग्रेस सिर्फ अपने सिद्धांतों और विचारधारा से ही नहीं भटक गयी है बल्कि किस चुनाव में किन मुद्दों को लेकर आगे जाना है इसको लेकर भी अटक गयी है। हालिया कुछ राज्य विधानसभा चुनावों की बात कर लें तो ऐसे लोगों को प्रभारी बनाकर भेज दिया जाता है जो अपने अड़ियल रवैये के कारण राज्य के नेताओं को भरोसे में नहीं लेते। सिर्फ अपनी चलाते हैं और जैसे ही चुनाव परिणाम कांग्रेस को चलता कर देते हैं यह प्रभारी लोग भी वापस दिल्ली को चल देते हैं। अचम्भे की बात यह है कि ऐसे प्रभारियों को कांग्रेस में लगातार तरक्की भी मिल रही है जोकि पार्टी को पलीता लगाने में जुटे हुए हैं। जया कांग्रेस में जनाधार वाले नेताओं की कोई पूछ है? यह सवाल जरा एक बार जनाधार वाले नेताओं से करके देखिये वह ऑफ द रिकॉर्ड अपने साथ हो रहे अन्याय की लंबी कहानी सुनाने लग जायेंगे। कांग्रेस का शीर्ष नेतृत्व पिकनिक खूब मनाता है और राजनीतिक पर्यटन भी उन्हें खूब भाता है। हाथरस मामले को लेकर सड़क पर उतरे राहुल और प्रियंका अब इस मामले को भुला चुके हैं और उन्हें यह भी पता लग गया होगा कि कैसे जनता ने उज्जर प्रदेश विधानसभा उपचुनावों में कांग्रेस का सारा घर्मंड चूर-चूर कर दिया है।

राहुल के बारे में बराक ओबामा की टिप्पणियों पर हंगामा करने की जरूरत नहीं

डॉ. विजयलक्ष्मी

अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति बराक ओबामा के संस्मरण 'ए प्रोमिज्ड लैंड' नामक पुस्तक में भारत संस्मरण प्रकाशित हुए हैं। इस पुस्तक के पहले भाग में उन्होंने अपनी 2010 की पहली भारत-यात्रा का वर्णन किया है। उसके दौरान प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह, कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी और उनके पुत्र राहुल से हुई उनकी भेंट का भी विवरण है। उसे लेकर भारत के पक्ष-विपक्ष में काफी नोक-झोंक हो रही है। यह नोक-झोंक उस वक्त हो रही है, जबकि कांग्रेस पार्टी बिहार, म.प्र., उ.प्र., गुजरात आदि प्रांतों में बुरी तरह से हार गई है। राहुल गांधी को पसंद करते हुए भी ओबामा ने उन्हें आत्मविश्वासरहित उथला-सा नौजवान बताया है। इसे लेकर राहुल पर आक्रमण करने की जरूरत क्या है? यह तो राहुल पर बड़ी तात्कालिक, नरम और तटस्थ टिप्पणी है।

भारत के लोग यह कई बार बता चुके हैं कि वे राहुल के बारे में क्या सोचते हैं लेकिन कांग्रेसी लोग सार्वजनिक तौर पर या तो चुप रहते हैं या फिर राहुल के कसीदे काढ़ते हैं। यह उनकी मजबूरी है। ओबामा की इस टिप्पणी को लेकर उनकी आलोचना करना भी ठीक नहीं है, क्योंकि उन्हें जो ठीक लगा, सो उन्होंने लिख दिया। यदि वे कांग्रेस-विरोधी और मोदीभक्त होते तो क्या उसी प्रसंग में वे डॉ. मनमोहन सिंह और सोनिया गांधी की इतनी ज्यादा तारीफ करते? उनकी टिप्पणियों से यह अंदाज जरूर लगता है कि ओबामा खुले दिल के आदमी हैं। 1999 में वे जब शिकागो से सीनेटर थे, उनसे मेरी मुलाकात अचानक हो गई। मैं एक भारतीय मूल के मित्र से मिलने गया तो उन्होंने उनके पास बैठे एक अश्वेत व्यक्ति से मिलवाया था और वह सज्जन मेरे साथ 5-10 मिनट बैठे रहे। कई वर्ष बाद 2008 में मुझे मेरे मित्र ने बताया कि वे बराक ओबामा ही थे, जो हिलेरी के खिलाफ राष्ट्रपति का चुनाव लड़ रहे हैं।

बराक ओबामा की सज्जनता के कई किस्से अमेरिका में मशहूर हैं। यह पूछा जा रहा है कि उन्होंने नरेंद्र मोदी के बारे में कुछ क्यों नहीं लिखा? हो सकता है कि वे अपनी पुस्तक के दूसरे खंड में लिखें और कुछ ऐसा लिख दें कि उसे लेकर कांग्रेसी लोग भाजपा पर टूट पड़ें। यदि डोनाल्ड ट्रंप आपबीती लिख मारें तो वह दुनिया की सबसे ज्यादा बिकने वाली किताब बन सकती है। ओबामा ने अपने संस्मरणों में अन्य कई देशों के नेताओं पर भी टिप्पणी की है। इन टिप्पणियों के कारण उनकी किताब कई देशों में बहुत बिकेगी।

ओबामा की तुलना यदि हम अमेरिका के अन्य राष्ट्रपतियों- रिचर्ड निक्सन, रोनाल्ड रेगन, जॉर्ज डब्ल्यू बुश, जिमी कार्टर आदि से करें और उनके गोपनीय दस्तावेज देखें तो हम दंग रह जाएंगे। उन्होंने भारतीय प्रधानमंत्रियों के बारे में इतनी फूहड़ और आपत्तिजनक टिप्पणियां की हैं कि उनका उल्लेख करना भी उचित नहीं लगता।

यदि भारत के प्रधानमंत्री लोग भी ओबामा की तरह अपने संस्मरण लिखते तो उन पर जमकर बहस चल सकती थी लेकिन ज्यादातर प्रधानमंत्री अपने पद से हटने के बाद देवगौड़ा या मनमोहन सिंह की तरह ज्यादा जिये नहीं। हमारे कुछ पूर्व राष्ट्रपतियों ने जरूर अपने संस्मरण लिखे हैं, जो कि पठनीय हैं लेकिन उनमें वह वजन नहीं है, जो किसी प्रधानमंत्री के संस्मरण में होता है।

सुशासन के लिये जरूरी है दायित्व और उसका ईमानदारी से निर्वहन। लेकिन विडम्बना है कि सरकारें न तो दायित्व ढंग से ओढ़ती हैं और न ओढ़े हुए दायित्वों का ईमानदारी से निर्वाह करती हैं। दायित्व और उसके ईमानदारी से निर्वहन करने की अनभिज्ञता संसार में जितनी क्रूर है, उतनी क्रूर मृत्यु भी नहीं होती। सुशासन समग्र प्रयास से स्थापित होता है। यह एकांगी कभी नहीं हो सकता। ऐसा नहीं हो सकता कि लचीली नीतियां बनाकर या कुछ प्रलोभन देकर राज्य में कारोबार के लिए स्थितियां तो बेहतर बना ली जाएं, पर अपराध और भ्रष्टाचार रोकने के मामले में शिथिलता बरतते रहें। जब किसी राज्य में सुशासन और खुशहाली आंकी जाती है तो उसमें देखा जाता है कि वहां के लोगों का जनजीवन कैसा है, उन्हें सार्वजनिक सुविधाएं-सड़कें, अस्पताल, सार्वजनिक परिवहन, बिजली-पानी, सुरक्षा-व्यवस्था कितनी नियोजित प्राप्त है, वहां स्वास्थ्य, शिक्षण संस्थाएं कैसी हैं। वहां के किसान, दुकानदार कितने सहज महसूस करते हैं। महिलाएं और समाज के निर्बल कहे जाने वाले तबकों के लोग कितने सुरक्षित हैं। प्रशासन से आम लोगों की कितनी नजदीकी है। अगर कोई अपराध होता है तो दोषियों की धर-पकड़ में कितनी मुस्तैदी दिखाई जाती है और कितने न्यायपूर्ण तरीके से उसे निपटाया जाता है।

सुशासन के लिये जरूरी है अपने दायित्व का ईमानदारी से निर्वहन

शांतिपूर्ण शासन व्यवस्था एवं सुशासन के लिये जरूरी है कि आम-जनजीवन में कम-से-कम सरकारी औपचारिकताएं हों, कानून कम हो, सरकारी विभाग कम-से-कम हों। कुछ राज्य ऐसे हैं जहां 20-25 सरकारी विभाग होने चाहिए, लेकिन उनकी संख्या 50-60 से अधिक है।

ललित पाल



सत्ता एवं समाज को विनम्र करने का हथियार मुद्दे या लॉबी नहीं, पद या शोभा नहीं, ईमानदारी है और सुशासन है। और यह सब प्राप्त करने के लिए ईमानदारी के साथ सौदा नहीं किया जाना चाहिए, क्योंकि यह भी एक सच्चाई है कि राष्ट्र, सरकार, समाज, संस्था व संविधान ईमानदारी से चलते हैं, न कि झूठे दिखावे, आश्वासन एवं वायदों से। सत्ता की कमान संभालते वक्त हर सरकार बेहतर सुशासन देने के दावे करती है, मगर हकीकत में वे दावे सिरे नहीं चढ़ पाते, कोरे दिखावे साबित होते हैं। सुशासन यानी चुस्त कानून-व्यवस्था, बेहतर बुनियादी सुविधाएं और सेवाएं, कारोबार और रोजगार के अच्छे अवसर, कथनी और करनी में समानता, नागरिक सुरक्षा एवं संरक्षा आदि। ये सब बातें सिर्फ पक्ष या विपक्ष में बंटे नागरिकों के संतोष या असंतोष पर निर्भर नहीं करतीं, बल्कि नागरिक जीवन की खुशहाली, सुरक्षा एवं शांतिपूर्ण जीवन निर्वाह के पैमाने पर तय होती है।

आजकल सरकारों के सुशासन एवं आदर्श-कार्यशैली का मूल्यांकन केवल चुनाव के वक्त ही नहीं होता बल्कि कई राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय एजेंसियां इस तरह का अध्ययन करके मूल्यांकन करने लगी हैं। इस तरह के मूल्यांकन के मुख्य मानक हैं कि दुनिया के किस देश, किस राज्य और शहर में नागरिक सुविधाओं की क्या स्थिति है। बंगलुरु की पब्लिक अफेयर सेंटर नामक एजेंसी ने सार्वजनिक मामलों को लेकर भारत के विभिन्न राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेशों का अध्ययन किया है और उन्हें अंकों के आधार पर वर्गीकृत करते हुए बताया है कि केंद्र शासित प्रदेशों में सुशासन के स्तर पर चंडीगढ़ सबसे ऊपर है। राज्यों में केरल शीर्ष पर और दक्षिण के दूसरे सभी राज्य ऊपर के पायदान पर हैं तो उत्तर

प्रदेश, बिहार और ओड़ीसा सबसे खराब स्थिति में हैं। उत्तर प्रदेश सबसे निचले पायदान पर है। अभी कुछ दिनों पहले ही एक दूसरी एजेंसी ने अपनी रिपोर्ट में बताया था कि कारोबार करने की दृष्टि से उत्तर प्रदेश में स्थितियां बाकी सभी राज्यों की तुलना में सबसे बेहतर है। इसी तरह के विरोधाभास दूसरे कुछ राज्यों के मामले में भी उभर सकते हैं।

सुशासन के लिये जरूरी है दायित्व और उसका ईमानदारी से निर्वहन। लेकिन विडम्बना है कि सरकारें न तो दायित्व ढंग से ओढ़ती हैं और न ओढ़े हुए दायित्वों का ईमानदारी से निर्वाह करती हैं। दायित्व और उसके ईमानदारी से निर्वहन करने की अनभिज्ञता संसार में जितनी क्रूर है, उतनी क्रूर मृत्यु भी नहीं होती। सुशासन समग्र प्रयास से स्थापित होता है। यह एकांगी कभी नहीं हो सकता। ऐसा नहीं हो सकता कि लचीली नीतियां बनाकर या कुछ प्रलोभन देकर राज्य में कारोबार के लिए स्थितियां तो बेहतर बना ली जाएं, पर अपराध और भ्रष्टाचार रोकने के मामले में शिथिलता बरतते रहें। जब किसी राज्य में सुशासन और खुशहाली आंकी जाती है तो उसमें देखा जाता है कि वहां के लोगों का जनजीवन कैसा है, उन्हें सार्वजनिक सुविधाएं-सड़कें, अस्पताल, सार्वजनिक परिवहन, बिजली-पानी, सुरक्षा-व्यवस्था कितनी नियोजित प्राप्त है, वहां स्वास्थ्य, शिक्षण संस्थाएं कैसी हैं। वहां के किसान, दुकानदार कितने सहज महसूस करते हैं। महिलाएं और समाज के निर्बल कहे जाने वाले तबकों के लोग कितने सुरक्षित हैं। प्रशासन से आम लोगों की कितनी नजदीकी है। अगर कोई अपराध होता है तो दोषियों की धर-पकड़ में कितनी मुस्तैदी दिखाई जाती है और कितने न्यायपूर्ण तरीके से उसे निपटाया जाता है। बंगलुरु के जिस संस्थान ने राज्यों में सुशासन

संबंधी ताजा रिपोर्ट जारी की है, उसने भी समानता, पारदर्शिता, सतर्कता, विकास और निरंतरता के आधार पर अध्ययन किया। इन बिंदुओं का महत्व समझा जा सकता है। इन्हीं के आधार पर अंदाजा लगाया जा सकता है कि आने वाले दिनों में किन राज्यों का देश के आर्थिक विकास में कैसा और कितना योगदान रह सकता है। टिकाऊ विकास के मामले में इनसे कितनी मदद मिल सकती है। कुछ लोगों का तर्क हो सकता है कि छोटे राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों का दायरा छोटा और उनकी आबादी कम होती है, इसलिए कानून-व्यवस्था और बुनियादी सुविधाओं के मामले में बेहतर काम हो पाते हैं, मगर उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश, राजस्थान जैसे बड़े और सघन आबादी वाले राज्यों में सरकारों के सामने कई मुश्किलें खड़ी हो सकती हैं। मगर यह तर्क जिम्मेदारियों से बचाव का कोई रास्ता नहीं हो सकता। राज्यों को उनके आकार और आबादी के हिसाब से बजटीय आवंटन किए जाते हैं, उनकी आमदनी भी उसी अनुपात में छोटे राज्यों की अपेक्षा अधिक मानी जा सकती है। ऐसे में अगर बुनियादी स्तर पर वे बेहतर काम नहीं कर पातीं, तो यह उनकी नाकामी ही कही जाएगी। सुशासन के मामले में पिछड़े हर राज्य को अपने से बेहतर राज्यों से प्रेरणा लेनी चाहिए।

शांतिपूर्ण शासन व्यवस्था एवं सुशासन के लिये जरूरी है कि आम-जनजीवन में कम-से-कम सरकारी औपचारिकताएं हों, कानून कम हो, सरकारी विभाग कम-से-कम हों। कुछ राज्य ऐसे हैं जहां 20-25 सरकारी विभाग होने चाहिए, लेकिन उनकी संख्या 50-60 से अधिक है। कई राज्य ऐसे भी हैं जहां पुराने और अप्रासंगिक कानूनों का ढेर जमा है। वे सुशासन में बाधक भी हैं और जन-जीवन के लिये जटिल भी हैं। आदर्श-

शासन व्यवस्था में राज्य सरकारें बेकार के इन कानूनों से पीछा छुड़ाएं। अच्छा हो कि राज्य सरकारें भी समझें कि पुराने कानूनों की मौजूदगी नौकरशाही के काम करने के तौर-तरीकों से सबसे अधिक नुकसान उनका ही हो रहा है। जन कल्याण और विकास की चाहे जितनी बेहतर नीतियां हों, यदि उन पर सही ढंग से अमल करने वाला सरकारी तंत्र नहीं होगा तो फिर कुछ भी हासिल होने वाला नहीं है। राज्य सरकारें हर स्तर पर सुशासन कायम करके ही अपने वायदों को पूरा करने के साथ ही आम जनता के जीवन को खुशहाल बना सकती हैं।

सुशासन की बाधाओं में एक बड़ी बाधा है कि सरकारें बिना योजनाबद्ध तरीके से काम को अंजाम देती हैं। ऐसी सरकारें कार्य पहले प्रारम्भ कर देती हैं और योजना बाद में बनाती हैं, वे परत-दर-परत समस्याओं व कठिनाइयों से घिरी रहती हैं। उनकी मेहनत सार्थक नहीं होती। उनके संसाधन नाकामी रहते हैं और वे चाह कर भी जनता की भावनाओं पर खरी नहीं उतर पाती हैं। कमजोर शरीर में जैसे बीमारियां घुस जाती हैं, वैसे ही कमजोर नियोजन और कमजोर शासन व्यवस्था से कई-कई असाध्य रोग लग जाते हैं और वे सुशासन की बड़ी बाधा बन जाते हैं।

सत्ता को हांकने वाले अपने नाम, पद व शोभा को ही ओढ़ पाते हैं। जबकि दायित्व और चुनौतियां उनसे कई गुना ज्यादा होती हैं। इस प्रकार के दृश्य आज ऊपर से नीचे तक नजर आते हैं, जहां नियोजन में कल्पनाशीलता व रचनात्मकता का नितांत अभाव रहता है और लक्ष्य सोपान पर ही लड़खड़ा जाता है। नियमितता तो हमने सीखी ही नहीं और सीखेंगे भी नहीं। आजकल एक प्रवृत्ति और चल पड़ी है, मुद्दों की। कौन-सा मुद्दा जनहित का है, उन्हें कोई मतलब नहीं। कौन-सा स्वहित का है, उससे मतलब है। और दूसरी हवा जो चल पड़ी है, लॉबी बनाने की, ग़रुप बनाने की। इसमें न संविधान आड़े आता है, न सिद्धांत क्योंकि 'सम विचार' इतना खुला शब्द है कि उसके भीतर सब कुछ छिप जाता है। छोटे प्रांत हों या बड़े प्रांत सभी शासन-व्यवस्था में लॉबी का रोग लग गया है। जो शक्ति शासन व समाज के हित में लगनी चाहिए, वह गलत दिशा में लग जाती है। सिद्धांत और व्यवस्था के आधारभूत मूल्यों को मटियामेट कर सामाजिक, राजनैतिक और धार्मिक स्तर पर कीमत वसूलने की कोशिश की जाती है। सत्य को ढंका जाता है या गंगा किया जाता है पर स्वीकारा नहीं जाता। और जो सत्य के दीपक को पीछे रखते हैं वे मार्ग में अपनी ही छाया डालते हैं। और ऐसे लोग सुशासन के नाम पर एक गाली बन जाते हैं।

हमारे कर्णधार पद की श्रेष्ठता और दायित्व की ईमानदारी को व्यक्तिगत अहम् से ऊपर समझने की प्रवृत्ति को विकसित कर मर्यादित व्यवहार करना सीखें अन्यथा शतरंज की इस बिसात में यदि प्यादा वज्रों को पीट ले तो आश्चर्य नहीं। बहुत से लोग काफी समय तक दवा के स्थान पर बीमारी ढोना पसन्द करते हैं पर क्या वे जीते जी नष्ट नहीं हो जाते? खीर को ठण्डा करके खाने की बात समझ में आती है पर बासी होने तक ठण्डी करने का क्या अर्थ रह जाता है? एक आदर्श शासन व्यवस्था के लिये जरूरी है कि सत्ता का नेतृत्व करने वाले आज जनता के विश्वास का उपभोक्ता नहीं अपितु संरक्षक बनें।

(कहानी)

अनाथ



गांव की किसी एक अभागिनी के अत्याचारी पति के तिरस्कृत कर्मों की पूरी व्याख्या करने के बाद पड़ोसिन तारामती ने अपनी राय संक्षेप में प्रकट करते हुए कहा- ‘आग लगे ऐसे पति के मुंह में।’

सुनकर जयगोपाल बाबू की पत्नी शशिकला को बहुत बुरा लगा और ठेस भी पहुंची। उसने जबान से तो कुछ नहीं कहा, पर अन्दर-ही-अन्दर सोचने लगी कि पति जाति के मुख में सिगरेट सिगार की आग के सिवा और किसी तरह की आग लगाना या कल्पना करना कम-से-कम नारी जाति के लिए कभी किसी भी अवस्था में शोभा नहीं देता?

शशिकला को गुम-सुम बैठा देखकर कठोर हृदय तारामती का उत्साह दूना हो गया, वह बोली- ‘ऐसे खसम से तो जन्म-जन्म की रांड भली।’ और चटपट वहां से उठकर चल दी, उसके जाते ही बैठक समाप्त हो गई।

शशिकला गम्भीर हो गई। वह सोचने लगी, पति की ओर से किसी दोष की वह कल्पना भी नहीं कर सकती, जिससे उनके प्रति ऐसा कठोर भाव जागृत हो जाए। विचारते-विचारते उसके कोमल हृदय का सारा प्रतिफल अपने प्रवासी पति की ओर उच्छ्वसित होकर दौड़ने लगा। पर जहां उसके पति शयन किया करते थे, उस स्थान पर दोनों बांहें फैलाकर वह आँधी पड़ी रही और बारम्बार तकिए को छाती से लगाकर चूमने लगी, तकिए में पति के सिर के तेल की सुगन्ध को वह महसूस करने लगी और फिर द्वार बन्द करके बक्स में से पति का एक बहुत पुराना चित्र और स्मृति-पत्र निकालकर बैठ गई। उस दिन की निस्तब्ध दोपहरी, उसकी इसी प्रकार कमरे में एकान्त-चिन्ता, पुरानी स्मृति और व्यथा के आंसुओं में बीत गई।

शशिकला और जयगोपाल बाबू का दाम्पत्य जीवन कोई नया हो, सो बात नहीं है। बचपन में शादी हुई थी और इस दौरान में कई बाल-बच्चे भी हो चुके थे। दोनों ने बहुत दिनों तक एक साथ रहकर साधारण रूप में दिन काटे। किसी भी ओर से इन दोनों के अपरिमित स्नेह को देखने कभी कोई नहीं आया? लगभग सोलह वर्ष की एक लम्बी अवधि बिताने के

बाद उसके पति को महज काम-धाम ढूंढ़ने के लिए अचानक परदेश जाना पड़ा और विच्छेद ने शशि के मन में एक प्रकार का प्रेम का तूफान खड़ा कर दिया। विरह-बंधन में जितनी खिंचाई होने लगी, कोमल हृदय की फांसी उतनी ही कड़ी होने लगी। इस ढीली अवस्था में जब उसका अस्तित्व भी मालूम नहीं पड़ा, तब उसकी पीड़ा अन्दर से टीसें मारने लगी। इसी से, इतने दिन बाद, इतनी आयु में बच्चों की मां बनकर शशिकला आज बसन्त की दुपहरिया में निर्जन घर में विरह-शैया पर पड़ी नव-वधू का-सा सुख-स्वप्न देखने लगी। जो स्नेह अज्ञात रूप जीवन के आगे से बहा चला गया है सहसा आज उसी के भीतर जागकर मन-ही-मन बहाव से विपरीत तैरकर पीछे की ओर बहुत दूर पहुंचना चाहती है। जहां स्वर्णपुरी में कुंज वनों की भरमार है, और स्नेह की उन्माद अवस्था किन्तु उस अतीत के स्वर्णिम सुख में पहुंचने का अब उपाय क्या है? फिर स्थान कहां है? सोचने लगी, अबकी बार जो वह पति को पास पाएगी तब जीवन की इन शेष घड़ियों को और बसन्त की आभा भी निष्फल नहीं होने देगी। कितने ही दिवस, कितनी ही बार उसने छोटी-मोटी बातों पर वाद-विवाद करके इतना ही नहीं, उन बातों पर कलह कर-करके पति को परेशान कर डाला है। आज अतृप्त मन ने भी एकान्त इच्छा से संकल्प किया कि भविष्य में कदापि संघर्ष न करेगी, कभी भी उनकी इच्छा के विरुद्ध नहीं चलेगी, उनकी आज्ञा को पूरी तरह पालेगी, सब काम उनकी तबीयत के अनुसार किया करेगी, स्नेह-युक्त विनम्र हृदय से अपने पति का बुरा-भला व्यवहार सब चुपचाप सह लिया करेगी; कारण पति सर्वस्व है, पति प्रियतम है, पति देवता है।

बहुत दिनों तक शशिकला अपने माता-पिता की एकमात्र लाडली बेटी रही है। उन दिनों जयगोपाल बाबू वास्तव में मामूली नौकरी किया करते थे, फिर भी भविष्य के लिए उसे किसी प्रकार की चिन्ता न थी। गांव में जाकर पूर्ण वैभव के साथ रहने के लिए उसके श्वसुर के पास पर्याप्त मात्रा में चल-अचल संपत्ति थी।

इसी बीच, बिल्कुल ही असमय में शशिकला

के वृद्ध पिता कालीप्रसन्न के यहां पुत्र ने जन्म लिया। सत्य कहने में क्या है? भाई के इस जन्म से शशिकला को बहुत दुःख हुआ और जयगोपाल बाबू भी इस नन्हे साले को पाकर विशेष प्रसन्न नहीं हुए।

अधिक आयु में बच्चा होने के कारण उस पर माता-पिता के लाड़-प्यार का कोई ठिकाना न रहा। उस नवजात छोटे दूध-पीते निद्रातुर साले ने अपनी अज्ञानता में न जाने कैसे अपने कोमल हाथों की छोटी-छोटी मुट्टियों में जयगोपाल बाबू की सारी आशाएं पीसकर जब चकनाचूर कर दीं तब वह आसाम के किसी छोटे बगीचे में नौकरी करने के लिए चल दिया?

सबने कहा सुना कि पास में ही कहीं छोटा-मोटा काम-धन्धा खोज करके यहीं रहो तो अच्छा हो, किन्तु चाहे गुस्से के कारण से हो या गैरों की नौकरी करने में शीघ्र ही अमीर बनने की धुन से हो, उसने किसी की बात पर ध्यान नहीं दिया। शशि को बच्चों के साथ उसके मायके में छोड़कर वह आसाम चला गया। विवाह के उपरान्त इस दम्पति में यह पहला विच्छेद था।

पति के चले जाने से, शशि को दुधमुंहे भाई पर बड़ा क्रोध आया। जो मन की पीड़ा को स्पष्ट रूप में कह नहीं सकता, उसी को क्रोध अधिक आता है। छोटा-सा नवजात शिशु मां के स्तनों को चूमता और आंख मींचकर निश्चिन्तता से सोता, और उसकी बड़ी बहन अपने बच्चों के लिए गर्म दूध, ठण्डा भात स्कूल जाने की देर इत्यादि अनेक कारणों से रात-दिन रूठकर मुंह फुलाये रहती और सारे परिवार को परेशान करती।

थोड़े दिन बाद ही बच्चे की मां का स्वर्गवास हो गया। मरते समय मां अपने गोद के बच्चे को लड़की के हाथ सौंप गई।

अब तो बहुत ही शीघ्र मातृहीन शिशु ने अपनी कठोरहृदया दीदी का हृदय जीत लिया। हा हा, ही-ही करता हुआ वह शिशु जब अपनी दीदी के ऊपर जा पड़ता और अपने बिना दांत के छोटे से मुख में उसका मुंह, नाक, कान सब कुछ ले जाना चाहता, अपनी छोटी-

सी मुट्ठी में उसका जूड़ा पकड़कर जब खींचता और किसी कीमत पर भी हाथों में आई वस्तु को छोड़ने के लिए तैयार न होता, दिवाकर के उदय होने से पहले ही उठकर जब वह गिरता-पड़ता हुआ अपनी दीदी को कोमल स्पर्श से पुलकित करता, किलकारियां मार-मारकर शोर मचाना आरम्भ कर देता, और जब वह क्रमशः दी...दी...दीदी पुकार-पुकारकर बारम्बार उसका ध्यान बंटाने लगा और जब उसने काम-काज और फुर्सत के समय, उस पर उपद्रव करने आरम्भ कर दिए, तब शशि से स्थिर नहीं रहा गया। उसने उस छोटे से स्वतन्त्र प्रेमी अत्याचारी के आगे पूरे तौर पर आत्मसमर्पण कर लिया। बच्चे की मां नहीं थी, इसी से शायद उस पर उसकी सुरक्षा का अधिक भार आ पड़ा।

शिशु का नाम हुआ नीलमणि। जब वह दो वर्ष का हुआ तब उसके पिता असाध्यम रोगी हो गये। बहुत ही शीघ्र चले आने के लिए जयगोपाल बाबू को लिखा गया। जयगोपाल बाबू जब मुश्किल से उस सूचना को पाकर ससुराल पहुँचे, तब श्वसुर कालीप्रसन्न मौत की घड़ियां गिन रहे थे।

मरने से पूर्व कालीप्रसन्न ने अपने एकमात्र नाबालिग पुत्र नीलमणि का सारा भार दामाद जयगोपाल बाबू पर छोड़ दिया और अपनी अचल संपत्ति का एक चौथाई भाग अपनी बेटी शशिकला के नाम कर दिया।

इसलिए चल-अचल संपत्ति की सुरक्षा के लिए जयगोपाल बाबू को आसाम की नौकरी छोड़कर ससुराल चले आना पड़ा।

बहुत दिनों के उपरान्त पति-पत्नी में मिलन हुआ। किसी जड़-पदार्थ के टूट जाने पर, उनके जोड़ों को मिलाकर किसी प्रकार उसे जोड़ा जा सकता है, किन्तु दो मानवी हृदयों को, जहां से फट जाते हैं, विरह की लंबी अवधि बीत जाने पर फिर वहां ठीक पहले जैसा जोड़ नहीं मिलता? कारण हृदय सजीव पदार्थ है; क्षणों में उसकी परिणति होती है और क्षण में ही परिवर्तन।

इस नए मिलन पर शशि के मन में अबकी बार नए ही भावों का श्रीगणेश हुआ। मानो

जो स्नेह अज्ञात रूप जीवन के आगे से बहा चला गया है सहसा आज उसी के भीतर जागकर मन-ही-मन बहाव से विपरीत तैरकर पीछे की ओर बहुत दूर पहुंचना चाहती है। जहां स्वर्णपुरी में कुंज वनों की भरमार है, और स्नेह की उन्माद अवस्था किन्तु उस अतीत के स्वर्णिम सुख में पहुंचने का अब उपाय क्या है? फिर स्थान कहां है? सोचने लगी, अबकी बार जो वह पति को पास पाएगी तब जीवन की इन शेष घड़ियों को और बसन्त की आभा भी निष्फल नहीं होने देगी। कितने ही दिवस, कितनी ही बार उसने छोटी-मोटी बातों पर वाद-विवाद करके इतना ही नहीं, उन बातों पर कलह कर-करके पति को परेशान कर डाला है। आज अतृप्त मन ने भी एकान्त इच्छा से संकल्प किया कि भविष्य में कदापि संघर्ष न करेगी, कभी भी उनकी इच्छा के विरुद्ध नहीं चलेगी, उनकी आज्ञा को पूरी तरह पालेगी, सब काम उनकी तबीयत के अनुसार किया करेगी, स्नेह-युक्त विनम्र हृदय से अपने पति का बुरा-भला व्यवहार सब चुपचाप सह लिया करेगी; कारण पति सर्वस्व है, पति प्रियतम है, पति देवता है।

पति की बात पर भरोसा करना शशि का कर्तव्य है किन्तु वह किसी भी तरह भरोसा न कर सकी? तब फिर उसकी अपनी सुख की घर-गृहस्थी और स्नेह का दाजपत्य जीवन सब-कुछ सहसा भयानक रूप में उसके समक्ष आ खड़ा हुआ। जिस घर-द्वार को वह अपना आश्रय समझ रही थी, अचानक देखा कि उसके लिए वह एक निष्ठुर फांसी बन गया है, जिसने चारों ओर से उन दोनों बहन-भाई को घेर रखा है। वह अकेली अबला है, असहाय नीलमणि को कैसे बचाये, उसकी कुछ समझ में नहीं आता। जैसे-जैसे वह सोचने लगी। वैसे-वैसे भय और घृणा से संकट में पड़े हुए अबोध भाई पर उसका प्यार बढ़ता ही गया। उसका हृदय ममता और आंखें अश्रुओं से भर आईं। वह सोचने लगी यदि उसे उपाय मालूम होता तो वह लाट साहब के दरबार में अपनी अर्जी दिलवाती और वहां से भी कुछ न होता तो महारानी विक्टोरिया के पास खत भेजकर अपने भाई की जायदाद अवश्य बचा लेती और महारानी साहिबा नीलमणि की वार्षिक सात सौ अड़बन रुपये लाभ की जायदाद हासिलपुर कदापि नहीं बिकने देती।

अपने पति से उसका पुनः विवाह हुआ हो। पहले दाम्पत्य में पुरानी आदतों के कारण जो एक जड़ता-सी आ गई थी, विरह के आकर्षण से वह एकदम टूट गई, और अपने पति को मानो उसने पहले की अपेक्षा कहीं अधिक पूर्णता के साथ पा लिया। मन-ही-मन में उसने संकल्प किया कि चाहे कैसे ही दिन बीतें, वह पति के प्रति उद्दीप्त स्नेह की उज्ज्वलता को तनिक भी म्लान न होने देगी।

किन्तु इस नए मिलन में जयगोपाल बाबू के मन की दशा कुछ और ही हो गई। इससे पूर्व जब दोनों अविच्छेद रूप से एक साथ रहा करते थे, जब पत्नी के साथ उसके पूरे स्वार्थ और विभिन्न कार्यों में एकता का संबंध था, जब पत्नी के साथ उसके जीवन का एक नित्य सत्य हो रही थी और जब वह उसे पृथक् करके कुछ करना चाहते थे तो दैनिकचर्या की राह में चलते-चलते अवश्य उनका पांव अकस्मात् गहरे गर्त में पड़ जाता। उदाहरणतः कहा जा सकता है कि परदेश जाकर पहले-पहल वह भारी मुसीबत का शिकार हो गये। वहां उन्हें ऐसा प्रतीत होने लगा, मानो अकस्मात् उन्हें किसी ने गहरे जल में धक्का दे दिया है। लेकिन क्रमशः उनके उस विच्छेद में नए कार्य को थेली लगा दी गई।

केवल इतना ही नहीं; अपितु पहले जो उनके दिन व्यर्थ आलस्य में कट जाए करते थे, उधर दो वर्ष से अपनी आर्थिक अवस्था सुधरने की कोशिश के रूप में उनके मन में एक प्रकार की जबर्दस्त क्रांति का उदय हुआ। उनके मन के सम्मुख मालदार बनने की एकनिष्ठ इच्छा के सिवा और कोई चीज नहीं थी। इस नए उन्माद की तीव्रता के आगे पिछला जीवन उनको बिल्कुल ही सारहीन-सा दृष्टिगत होने लगा।

नारी जाति की प्रकृति में खास परिवर्तन ले आता है स्नेह, और पुरुष जाति की प्रकृति में कोई खास परिवर्तन होता है, तो उसकी जड़ में रहती है कोई-न-कोई दुष्ट-प्रवृत्ति।

जयगोपाल बाबू दो वर्ष पश्चात् आकर पत्नी से मिले तो उन्हें हू-ब-हू पहली-सी पत्नी नहीं मिली। उनकी पत्नी शशि के जीवन में उनके नवजात साले ने एक नई ही परिधि स्थित कर दी है, जो पहले से भी कहीं अधिक विस्तृत और संकीर्णता से कोसों दूर है। शशि के मन के इस भाव से वह बिल्कुल ही अनभिज्ञ थे और न इससे उनका मेल ही बैठता था। शशि अपने इस नवजात शिशु के स्नेह में से पति को भाग देने का बहुत यत्न करती, पर उसमें इसे सफलता मिली या नहीं, कहना कठिन है।

शशि नीलमणि को गोदी में उठाकर हंसती हुई पति के सामने आती और उनकी गोद में देने की चेष्टा करती, किन्तु नीलमणि पूरी ताकत के साथ दीदी के गले से चिपट जाता और अपने सम्बन्ध की तनिक भी परवाह न करके दीदी के कन्धे से मुंह को छिपाने का प्रयत्न करता।

शशि की इच्छा थी कि उसके इस छोटे से भाई को मन बहलाने की जितनी ही प्रकार की विद्या आती है, सबकी सब बहनोई के आगे प्रकट हो जाए। लेकिन न तो बहनोई ने ही इस विषय में कोई आग्रह दिखाया और न साले ने ही कोई दिलचस्पी दिखाई। जयगोपाल बाबू की समझ में यह बिल्कुल न आया कि इस दुबले-पतले चौड़े माथे वाले मनहूस सूरत काले-कलूटे बच्चे में ऐसा कौन-सा आकर्षण है, जिसके लिए उस पर प्यार की इतनी फिजूलखर्ची की जा रही है।

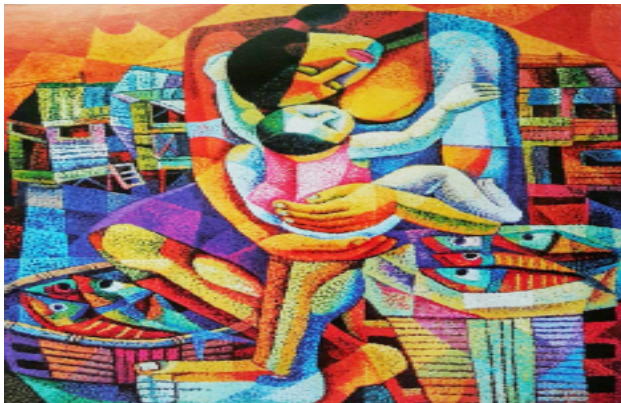
प्यार की सूक्ष्म से सूक्ष्म बातें नारी-जाति चट से समझ जाती है। शशि तुरन्त ही समझ गई कि जयगोपाल बाबू को नीलमणि के प्रति कोई खास रुचि नहीं है और वह शायद मन से उसे चाहते भी नहीं हैं। तब से वह अपने

भाई को बड़ी सतर्कता से पति की दृष्टि से बचाकर रखने लगी। जहां तक हो सकता, जयगोपाल की विराग दृष्टि उस पर नहीं पड़ने पाती।

और इस प्रकार वह बच्चा उस अकेली का एकमात्र स्नेह का आधार बन गया। उसकी वह इस प्रकार देखभाल रखने लगी, जैसे वह उसका बड़े यत्न से इकट्ठा किया हुआ गुप्त धन है। सभी जानते हैं कि स्नेह जितना ही गुप्त और जितना ही एकान्त का होता, उतना ही तेज हुआ करता है।

नीलमणि जब कभी रोता तो जयगोपाल बाबू को बहुत ही झुंझलाहट आती। अतः शशि झट से उसे छाती से लगाकर खूब प्यार कर-करके हंसाने का प्रयत्न करती; खासकर रात को उसके रोने से यदि पति की नींद उचटने की सम्भावना होती और पति यदि उस रोते हुए शिशु के प्रति हिंसात्मक भाव से क्रोध या घृणा जाहिर करता हुआ तीव्र स्वर में चिल्ला उठता, तब शशि मानो अपराधिनी-सी संकुचित और अस्थिर हो जाती और उसी क्षण उसे गोदी में लेकर दूर जाकर प्यार के स्वर में कहती- ‘सो जा मेरा राजा बाबू, सो जा’ वह सो जाता।

बच्चों-बच्चों में बहुधा किसी-न-किसी बात



पर झगड़ा हो ही जाता है? शुरू-शुरू में ऐसे अवसरों पर शशि अपने भाई का पक्ष लिया करती थी; कारण उसकी मां नहीं है। जब न्यायाधीश के साथ-साथ न्याय में भी अन्तर आने लगा तब हमेशा ही निर्दोष नीलमणि को कड़ा-से-कड़ा दण्ड भुगतना पड़ता। यह अन्याय शशि के हृदय में तीर के समान चुभ जाता और इसके लिए वह दण्डित भाई को अलग ले जाकर, उसे मिठाई देकर खिलौने देकर, गाल चूम करके, दिलासा देने का प्रयत्न किया करती।

परिणाम यह देखने में आता है कि शशि नीलमणि को जितना ही अधिक चाहती, जयगोपाल बाबू उतना ही उस पर जलते-भुनते रहते और वह जितना ही नीलमणि से घृणा करते, गुस्सा करते शशि उतना ही उसे अधिक प्यार करती।

जयगोपाल बाबू उन इंसानों में से हैं जो कि अपनी पत्नी के साथ कठोर व्यवहार नहीं करते और शशि भी उन स्त्रियों में से है जो स्निग्ध स्नेह के साथ चुपचाप पति की बराबर सेवा किया करती है। किन्तु अब केवल नीलमणि को लेकर अन्दर-ही-अन्दर एक गुठली-सी पकने लगी जो उस दम्पति के लिए व्यथा दे रही है।

इस प्रकार के नीरव द्वन्द्व का गोपनीय आघात-प्रतिघात प्रकट संघर्ष की अपेक्षा कहीं अधिक कष्टदायक होता है, यह बात उन समवयस्कों से छिपाना कठिन है जो कि विवाहित दुनिया की सैर कर चुके हों।

नीलमणि की सारी देह में केवल सिर ही सबसे बड़ा था। देखने में ऐसा प्रतीत होता जैसे विधाता ने एक खोखले पतले बांस में

फूंक मारकर ऊपर के हिस्से पर एक हंडिया बना दी है। डॉक्टर भी अक्सर भय प्रगट करते हुए कहा करते कि लड़का उस ढांचे के समान ही निकम्मा साबित हो सकता है। बहुत दिनों तक उसे बात करना और चलना नहीं आया। उसके उदासीन गम्भीर चेहरे को देखकर ऐसा प्रतीत होता कि उसके माता-पिता अपनी वृद्धावस्था की सारी चिन्ताओं का भार, इसी नन्हे-से बच्चे के माथे पर लाद गये हैं।

दीदी के यत्न और सेवा से नीलमणि ने अपने भय का समय पार करके छठे वर्ष में पदार्पण किया।

कार्तिक में भड़या-दूज के दिन शशि ने नीलमणि को नए-नए, बढ़िया वस्त्र पहनाये, खूब सजधज के साथ बाबू बनाया और उसके विशाल माथे पर टीका करने के लिए थाली सजाई। भड़या को पटड़े पर बिठाकर अंगूठे में रोली लगाकर टीका लगा ही रही थी कि इतने में पूर्वोक्त मुंहफट पड़ोसिन तारा आ पहुंची और आने के साथ ही बात-ही-बात में शशि के साथ संघर्ष आरम्भ कर दिया।

वह कहने लगी- ‘हाय, हाय! छिपे-छिपे भड़या का सत्यानाश करके ठाट-बाट से लोक दिखाऊ टीका करने से क्या फायदा?’



सुनकर शशि पर एक साथ आश्चर्य, क्रोध और वेदना की दामिनी-सी टूट पड़ी। अन्त में उसे सुनना पड़ा कि वे दोनों औरत-मर्द मिलकर सलाह करके नाबालिग नीलमणि की अचल संपत्ति को मालगुजारी-वसूली में नीलाम करवाकर पति के फुफेरे भाई के नाम खरीदने के साजिश कर रहे हैं।

शशि ने सुनकर कोसना शुरू किया- ‘जो लोग इतनी बड़ी झूठी बदनामी कर रहे हैं, भगवान करे उनकी जीभ जल जाए।’ और अश्रु बहाती हुई सीधी वह पति के पास पहुंची तथा उनसे सब बात कह सुनाई।

जयगोपाल बाबू ने कहा- ‘आजकल के जमाने में किसी का भरोसा नहीं किया जा सकता। उपेन्द्र मेरा सगा फुफेरा भाई है, उस पर सारी अचल संपत्ति का भार डालकर मैं निश्चित था। उसने कब मालगुजारी नहीं भरी और कब नीलाम में हासिलपुर खरीद लिया, मुझे कुछ पता ही नहीं लगा।’

शशि ने आश्चर्य के साथ पूछा- ‘तुम नालिश नहीं करोगे?’

जयगोपाल बाबू ने कहा- ‘भाई के नाम नालिश कैसे करूँ और फिर नालिश करने से कुछ फल भी नहीं निकलेगा, गांठ से और रुपये-पैसे की बर्बादी होगी?’

पति की बात पर भरोसा करना शशि का कर्तव्य है किन्तु वह किसी भी तरह भरोसा न कर सकी? तब फिर उसकी अपनी सुख की घर-गृहस्थी और स्नेह का दाम्पत्य जीवन सब-कुछ सहसा भयानक रूप में उसके समक्ष आ खड़ा हुआ। जिस घर-द्वार को वह अपना

आश्रय समझ रही थी, अचानक देखा कि उसके लिए वह एक निष्ठुर फांसी बन गया है, जिसने चारों ओर से उन दोनों बहन-भाई को घेर रखा है। वह अकेली अबला है, असहाय नीलमणि को कैसे बचाये, उसकी कुछ समझ में नहीं आता। जैसे-जैसे वह सोचने लगी। वैसे-वैसे भय और घृणा से संकट में पड़े हुए अबोध भाई पर उसका प्यार बढ़ता ही गया। उसका हृदय ममता और आंखें अश्रुओं से भर आईं। वह सोचने लगी यदि उसे उपाय मालूम होता तो वह लाट साहब के दरबार में अपनी अर्जी दिलवाती और वहां से भी कुछ न होता तो महारानी विक्टोरिया के पास खत भेजकर अपने भाई की जायदाद अवश्य बचा लेती और महारानी साहिबा नीलमणि की वार्षिक सात सौ अड़बन रुपये लाभ की जायदाद हासिलपुर कदापि नहीं बिकने देती।

इस प्रकार शशि जबकि सीधा महारानी विक्टोरिया के दरबार में न्याय कराके अपने फुफेरे देवर को ठीक करने का उपाय सोच रही थी, तब सहसा नीलमणि को तीव्र ज्वर चढ़ आया और ऐसा दौरा पड़ने लगा कि हाथ-पांव तन गये और बारम्बार बेहोशी बढ़ने लगी। जयगोपाल ने गांव के एक देशी काले डॉक्टर को बुलवाया। शशि ने अच्छे डॉक्टर के लिए प्रार्थना की तो जयगोपाल बाबू ने उत्तर दिया- ‘क्यों? मोतीलाल क्या बुरा डॉक्टर है?’

शशि जब उनके पांवों पर गिर गई, अपनी सौगंध खिलाकर भयभीत हिरनी की तरह निहारने लगी, तब जयगोपाल बाबू ने कहा- ‘अच्छ, शहर से डॉक्टर बुलवाता हूँ, ठहरो।’

शशि नीलमणि को छाती से चिपकाये पड़ी रही। नीलमणि भी एक पल के लिए भी उसे आंखों से ओझल नहीं होने देता; भय खाता कि उसे धोखा देकर दीदी उसकी कहीं चली जाए और इसलिए वह सदा उससे चिपटा रहता; यहां तक कि सो जाने पर भी पल्लू कदापि नहीं छोड़ता।

सारा दिन इसी प्रकार बीत गया। संध्या के बाद दिया-बत्ती के समय जयगोपाल बाबू ने आकर कहा- ‘शहर का डॉक्टर नहीं मिला, वह दूर कहीं मरीज देखने गया है।’ और इसके साथ ही यह भी कहा- ‘मुकदमे के कारण मुझे अभी इसी समय बाहर जाना पड़ रहा है। मैंने मोतीलाल से कह दिया है, दोनों वक्त आकर, अच्छी प्रकार से देखभाल किया करेंगे।’

रात को नीलमणि अंतसट बकने लगा। भोर होते ही शशि और कुछ भी न सोचकर खुद रोगी भाई को लेकर नाव में बैठ कलकत्ता के लिए चल दी।

कलकत्ता जाकर देखा कि डॉक्टर घर पर ही हैं; कहीं बाहर नहीं गये हैं। भले घर की स्त्री समझकर डॉक्टर ने झटपट उसके लिए ठहरने का प्रबन्ध कर लिया और उसकी मदद के लिए एक अधेड़ विधवा को नियुक्त कर दिया। नीलमणि का इलाज चलने लगा।

दूसरे ही दिन जयगोपाल बाबू भी कलकत्ता आ धमके। मारे गुस्से के आग-बबूला होकर उसने शशि को तत्काल ही घर लौटने का हुक्म दिया।

शशि ने कहा- ‘मुझे यदि तुम काट भी डालो, तब भी मैं अभी घर नहीं लौटने की। तुम सब मिलकर मेरे नीलमणि को मार डालना चाहते हो। उसके बाप नहीं, मां नहीं, मेरे सिवा उसका है ही कौन? मैं उसे बचाऊंगी, बचाऊंगी, अवश्य बचाऊंगी।’

जयगोपाल बाबू भावावेश में आकर बोले- ‘तो तुम यहीं रहो, मेरे घर अब कदापि मत

पृष्ठ ९ का शेष...ज्वालामुखी..... आना।’

शशि ने उसी क्षण तपाक से कहा-‘तुम्हारा घर कहां से आया? घर तो मेरे भाई का है।’ जयगोपाल बाबू बोले- ‘अच्छा देखा जाएगा।’

कुछ दिनों तक इस घटना को लेकर मोहल्ले के लोगों में चुहलबाजियां चलती रहीं, अनेक वाद-विवाद होते रहे। तभी पड़ोसिन तारा ने कहा- ‘अरे! खसम के साथ लड़ना ही हो तो घर पर रहकर लड़ो न, जितना लड़ना हो। घर छोड़कर बाहर लड़ने-झगड़ने की क्या जरूरत, कुछ भी हो, आखिर है तो अपना घरवाला ही?’

हाथ में जो कुछ जमा-पूँजी थी सब खर्च करके, आभूषण आदि जो कुछ थी थे सब बेचकर किसी प्रकार शशि ने अपने नाबालिग भाई को मौत के मुंह से निकाल लिया? और तब उसे पता लगा कि दुआर-गांव में उन लोगों की जो बड़ी भारी खेती की जमीन थी और उस पर उनकी पक्की हवेली भी थी, जिसकी वार्षिक आय लगभग डेढ़ सहस्र थी। वह भी जमींदार के साथ मिलकर जयगोपाल बाबू ने अपने नाम करा ली है। अब सारी अचल संपत्ति उसके पति की है, भाई का उसमें कुछ भी हक नहीं रहा है।

रोग से छुटकारा मिलने पर नीलमणि ने करुण स्वर में कहा- ‘दीदी! घर चलो।’ वहां अपने साथियों से खेलने के लिए उसका जी मचल रहा है। इसी से प्रेरित होकर वह बार-बार कहने लगा- ‘दीदी! अपने उसी घर में चलो न।’

सुनकर शशि रोने लगी, बोली- ‘हम लोगों का अब घर कहां है?’

लेकिन, केवल रोने से ही फल क्या? अब दीदी के सिवा इस दुनिया में उसके भाई का है ही कौन? यह सोचकर शशि ने आंखें पोंछ डालीं और साहस बटोरकर डिप्टी-मजिस्ट्रेट तारिणी बाबू के घर जाकर, उसकी पत्नी की शरण ली।

मजिस्ट्रेट साहब जयगोपाल बाबू को भली-भांति जानते थे। भले घर की बहू-बेटी घर से निकलकर जमीन-जायदाद के लिए पति से झगड़ना चाहती है, इस बात पर वे शशि पर गुस्सा हुए। उसे बातों से फुसलाये रखकर उसी समय उन्होंने जयगोपाल बाबू को पत्र लिखा। जयगोपाल बाबू साले सहित शशि को जबर्दस्ती नाव पर बैठकर गांव ले गया।

इस दम्पति का द्वितीय विच्छेद के बाद, फिर वह द्वितीय मिलन हुआ। जन्म-जन्म का साथ सृष्टिकर्ता का विधान जो ठहरा।

बहुत दिनों बाद घर लौटकर पुराने साथियों को पाकर नीलमणि बहुत खुश हुआ आनन्दपूर्वक घूमने-फिरने लगा। उसकी निश्चित खुशी को देखकर भीतर-ही-भीतर शशि की छाती फटने लगी।

शरद ऋतु आई। मजिस्ट्रेट साहब गांवों में छानबीन करने दौरे पर निकले और शिकार करने के लिए, जंगल से सटे हुए एक गांव में तम्बू तन गये। गांव के मार्ग में साहब के साथ नीलमणि की भेंट हुई। उसके सभी साथी साहब को देखकर दूर हट गये। निरीक्षण करता रहा। न जाने साहब को उससे कुछ दिलचस्पी हुई, उसने पास बुलाकर पूछा- ‘तुम स्कूल में पढ़ते हो?’

बालक ने चुपचाप खड़े रहकर सिर हिला दिया- ‘हां।’

साहब ने पुनः पूछा- ‘कौन-सी पुस्तक पढ़ते हो?’

नीलमणि ‘पुस्तक’ शब्द का मतलब न समझ सका, अतः साहब के मुंह की ओर देखता रहा।

घर पहुंचकर नीलमणि ने साहब के साथ अपने इस परिचय की बात खूब उत्साह के साथ दीदी को बताई।

दोपहर को अचकन, पाजामा, पगड़ी आदि बांधकर जयगोपाल बाबू साहब का अभिवादन करने के लिए पहुँचे। साहब उस समय तम्बू के बाहर खुली छाया में कैम्प मेज लगाये बैठे थे। सिपाही वगैरा की चारों ओर धूम मची हुई थी। उन्होंने जयगोपाल बाबू को चौकी पर बैठाकर गांव के हालचाल पूछे। जयगोपाल बाबू सर्वसाधारण गांव वालों के सामने जो इस प्रकार बड़प्पन का स्थान



घेरे बैठा है, इसके लिए वह मन-ही-मन फूला नहीं समा रहा है उसके मन में बार-बार यह विचार उठ रहे थे कि इस समय चक्रवर्ती और नन्दी घराने का कोई आकर देख जाता तो, कितना अच्छा होता?

इतने में नीलमणि को साथ लिये अवगुण्ठन ताने एक स्त्री सीधी साहब के सामने आकर खड़ी हो गई, बोली- ‘साहब आपके हाथ में मैं इस अनाथ भाई को सौंप रही हूं, आप इसकी रक्षा कीजिए।’

साहब पूर्व परिचित गम्भीर प्रकृति वाले बालक को देखकर उसके साथ वाली स्त्री को भले घर की बहू-बेटी समझ कर, उसी क्षण उठ के खड़े हो गये, बोले- ‘आप तम्बू में आइये।’

‘मुझे जो कुछ कहना है, वह यहीं कहूंगी।’

जयगोपाल बाबू का चेहरा फीका पड़ गया और घबराहट के मारे ऐसा हो गया, मानो अंगारे पर अचानक उसका पांव पड़ गया हो। गांव के लोग तमाशा देखने के लिए खिसक-खिसककर पास आने की चेष्टा करने लगे। तभी साहब ने बेंत उठाया और सब भाग खड़े हुए।

तब फिर शशिकला ने अपने अनाथ भाई का हाथ थामते हुए उस अनाथ बच्चे का सारा इतिहास शुरू से आखिर तक कह सुनाया। जयगोपाल बाबू ने बीच-बीच में रुकावट डालने की चेष्टा की, पर साहब ने गरजकर

उसे जहां का तहां बैठा दिया। ‘चुप रहो।’ और बेंत के संकेत से उसे चौकी से उठाकर सामने खड़ा होने का हुक्म दिया।

जयगोपाल बाबू शशि को मन-ही-मन कोसता हुआ सामने खड़ा रहा और नीलमणि अपनी दीदी से बिल्कुल चिपटकर मुंह बनाये चुपचाप खड़ा सुनता रहा।

शशि की बात सुन लेने पर साहब ने जयगोपाल बाबू से कई प्रश्न पूछे और उनका उत्तर पाकर, बहुत देर तक चुप रहकर शशि को सम्बोधित करके बोले-‘बेटी! यह मामला मेरी कचहरी में नहीं चल सकता, पर तुम बेफिक्र रहो, इस विषय में मुझे जो कुछ करना होगा, अवश्य करूंगा। तुम इस अनाथ भाई को लेकर बेधकड़क घर जा सकती हो।’

शशि ने कहा- ‘साहब जब तक इस अनाथ को अपना मकान नहीं मिल सकता तब तक इसे लेकर घर जाने का साहस मैं नहीं कर सकती। अब, यदि आप इसे अपने पास नहीं रखते तो और कोई भी इस अनाथ की रक्षा नहीं कर सकता?’

साहब ने पूछा- ‘तुम कहां जाओगी?’

शशि ने उत्तर दिया- ‘मैं अपने पति के घर लौट जाऊंगी, मेरी कुछ फिक्र नहीं है।’ साहब मुस्कराया और ताबीज बंधे और दुबले-पतले, गंभीर स्वभाव वाले काले रंग के उस दुखी अनाथ बालक को अपने पास रखने को तैयार हो गया।

इसके उपरान्त शशि जब विदा होने लगी, तब बालक ने उसकी धोती का छोर पकड़ लिया।

साहब ने कहा- ‘बेटा! तुम डरो मत, आओ, मेरे पास आओ।’

अवगुण्ठन के भीतर अश्रुओं से झरना बहाते और पोंछते हुए अनाथ की दीदी ने कहा- ‘मेरा राजा भैया है न, जा, जा, साहब के पास जा-तेरी दीदी तुझसे फिर मिलेगी, अच्छा।’

इतना कहकर उसने नीलमणि को उठा छाती से लगा लिया, और माथे पर, पीठ पर हाथ फेरकर किसी प्रकार उसके पतले हाथों से अपनी धोती का छोर छुड़ाया और बड़ी तेजी से वहां से चल दी। साहब ने तुरंत ही बाएं हाथ से उस अनाथ बालक को रोक लिया और बालक- ‘दीदी! दीदी!’ चिल्लाता हुआ जोर-जोर से रोने लगा।

शशि ने एक बार मुड़कर, दूर से अपना दाहिना हाथ उठाकर, अपनी ओर से उसे चुप होने के लिए सांत्वना दी और अपने टूक-टूक हुए हृदय को लेकर और भी तेजी से आगे निकल गई।

फिर बहुत दिनों तक उस पुरानी हवेली में पति-पत्नी का मिलन हुआ। सृष्टिकर्ता का विधान जो ठहरा।

लेकिन यह मिलन अधिक दिन तक न रह सका। कारण, इसके कुछ ही दिन बाद, एक दिन भोर होते ही गांव वालों ने सुना कि रात को जयगोपाल बाबू की स्त्री हैजे से मर गई और रात ही को उसका अन्तिम संस्कार हो गया।

विदा के समय शशि अपने अनाथ भाई को वचन दे आई थी कि उसकी दीदी उससे फिर मिलेगी, पता नहीं उस वचन को वह निभा सकी अथवा नहीं।

अध्यात्म

मेरा दुःख किसी और को दे दो

मैंने एक कहानी सुनी है कि एक आदमी निरंतर रोता था जा कर मस्जिद में कि हे प्रभु, मुझे इतना दुःखी क्यों बनाया? आखिर मैंने तेरा क्या बिगाड़ा है? यह अन्याय हो रहा है। और मैं तो सुनता था: तू बड़ा न्यायी है, रहीम है, रहमान है, कृपालु है, महाकरुणावान है! मगर सब धोखे की बातें हैं। मुझे इतना दुःख क्यों दिया? सब मजे में हैं। मगर सब धोखे की बातें हैं। मुझे इतना दुःख क्यों दिया? सब मजे में हैं। सब आनंद कर रहे हैं। मैं ही दुःख में पड़ा सड़ा जा रहा हूँ। कुछ कृपा कर! अगर सुख न दे सके तो कम से कम इतना तो कर कि किसी और का दुःख मुझे दे दे, यह मेरा दुःख किसी और को दे दो। इतना तो कर!

उसने एक रात सपना देखा कि कोई आवाज आकाश से कह रही है कि सब लोग अपने-अपने दुःख लेकर मस्जिद पहुंच जाएं। वह तो बड़ी जल्दी तैयार हो गया। उसने जल्दी से अपना दुःख बांधा, पोटली उठाई, भागा मस्जिद की तरफ। खुद भी भागा, उसने देखा, बड़ा हैरान हुआ कि पूरे गांव के लोग अपनी-अपनी पोटलियां लिए जा रहे हैं। वह तो सोचता था जिनके जीवन में कोई भी दुःख नहीं है, राजा भी भागा जा रहा है! वजीर भी भागे जा रहे हैं। नेता भी भागे जा रहे हैं, पंडित-पुरोहित भी भागे जा रहे हैं! उसने मौलवी को भी देखा, वह भी अपना गट्टर लिए चला जा रहा है। सबके गट्टर हैं। और एक और बात हैरानी की मालूम हुई: किसी के पास छोटी-मोटी पोटली नहीं। क्योंकि वह सोचने लगा कि किससे बदलना जब बदलने का मौका आ जाए। मगर सब बड़ी-बड़ी पोटलियां लिए हुए हैं। ये तो पोटलियां कभी दिखाई भी नहीं पड़ी थीं उसको। अभिनय चलता है। मस्जिद में पहुंच गए। बड़ा उत्तेजित! सारे लोग उत्तेजित हैं, क्योंकि कुछ होने वाला है। और फिर एक आवाज हुई कि सब लोग मस्जिद की खूंटियों पर अपनी-अपनी पोटलियां टांग दें। सबने जल्दी से टांग दीं। सभी छुटकारा पाना चाहते हैं। और फिर एक आवाज हुई कि अब जिसको जिसकी पोटली चुननी हो चुन लें, बदल लें। और वह आदमी भागा और सारे लोग भागे। मगर चकित होने की बात तो यह थी कि उस आदमी ने भागकर अपनी पोटली फिर से उठा ली, कि कोई दूसरा न उठा ले। और यही हालत सबकी थी-सबने अपनी-अपनी उठा ली।

वह बड़ा हैरान हुआ, लेकिन अब बात उसके खयाल में आ गई। उसने अपनी क्यों उठाई? सोचा कि अपने दुःख कम से कम परिचित तो हैं; दूसरे का बड़ा पोटला है और पता नहीं, इसके भीतर क्या हो! अपने दुःख कम से कम जाने-माने तो हैं, उनके साथ जीते तो रहे हैं जिंदगी भर, धीरे-धीरे अभ्यस्त भी हो गए हैं। और अब धीरे-धीरे उतना उनसे दुःख भी नहीं होता।

कांटा गड़ता ही रहा हो, गड़ता ही रहा हो, गड़ता रहा हो तो धीरे-धीरे चमड़ी भी मजबूत हो जाती है; उस जगह कांटा गड़ते-गड़ते, फिर चमड़ी में उता दर्द भी नहीं होता। सिरदर्द जिंदगीभर होता ही रहा तो धीरे-धीरे आदमी भूल ही जाता है; सिरदर्द और सिर में कोई फर्क ही नहीं रह जाता। एक अभ्यास हो जाता है।

और तब उसे समझ में आया कि सबने अपने-अपने उठा लिए; सब डर गए हैं कि कहीं दूसरे का न उठाना पड़े; पता नहीं दूसरे की अपरिचित पोटली, भीतर कौन-से सांप-बिच्छू समाए हों! प्रत्येक ने अपनी-अपनी पोटलियां उठा लीं और सब बड़े खुश हैं कि अपनी पोटली वापिस मिल गई। और सब अपने घर की तरफ भागे जा रहे हैं। सुबह जब उसकी नींद खुली, तब उसे सच्चाई समझ में आई-ऐसा ही है। यहां सब दुःखी हैं। मगर एक अभिनय चल रहा है।

इस अभिनय से जो जाग गया उसके जीवन में ही संन्यास का जन्म होता है। अभिनय से जाग जाना संन्यास है।

मुझसे लोग पूछते हैं -आपके संन्यास की परिभाषा क्या? मैं कहता हूं -अभिनय से जाग जाना संन्यास है। अब और अभिनय न करेंगे। अब और धोखा न देंगे। अब जीवन की सच्चाइयां परखेंगे। उन्हीं परखों से धीरे-धीरे तुम परम सत्य की तरफ संलग्न हो जाते हो।

‘ज्यों-ज्यों सूखें ताल है, त्यों-त्यों मीन मलीन।’

बसंत बीतने लगा। अब तालाब सूखने लगा-जीवन का तालाब। समय की धारा धीरे-धीरे सूखने लगी, आदमी बूढ़ा होने लगा।

‘ज्यों-ज्यों सूखें ताल है, त्यों-त्यों मीन मलीन।’

स्वभावतः वह जो मछली उस सागर के पानी में रहती थी, तालाब में रहती थी, अब तालाब सूखने लगा, वह मछली बड़ी दुःखी होने लगी। इसलिए बूढ़ा आदमी दुःखी होने लगता है।

तुम किसी बच्चे को शायद ही दुःखी पाओ; तुम किसी बूढ़े को शायद ही सुखी पाओ। अगर बच्चा कोई दुःखी मिल जाए तो समझना कि पिछले जन्मों की कमाई है। और अगर बूढ़ा सुखी मिल जाए तो समझना इस जन्म की कमाई है। नहीं तो बच्चे सुखी होते हैं, क्योंकि बेहोश हैं; होश नहीं अभी तो दुःख का पता क्या! अभी सीखा नहीं, अभी जीवन का कोई अनुभव नहीं। अभी जिंदगी के बाजार में गए नहीं, लुटे नहीं। अभी लुटेरे तैयारी कर रहे हैं; वे भी तैयार हो रहे हैं कि लुटने की तैयारी हो जाए।

और बूढ़े को तुम दुःखी ही पाओगे क्योंकि लुट गया-बाजार में लूट लिया गया; कुछ नहीं बचा हाथ में। अगर बूढ़ा प्रसन्न मिल जाए तो आनंदित मिल जाए समझना संत है। और बच्चा अगर दुःखी मिल जाए तो समझना कि संत है। क्योंकि बच्चे के दुःख का एक ही मतलब हो सकता है कि पिछले जन्मों का अनुभव नहीं भूला। और बूढ़े के सुख का एक ही मतलब हो सकता है कि परमात्मा से संबंध जुड़ गया।

सिनेमा

कियारा ने बताया उन्हें किससे होती है जलन



कियारा आडवाणी हाल ही में करीना कपूर के चैट शो 'वाट तुम वॉन्ट' में नजर आईं। इस दौरान कियारा आडवाणी और करीना कपूर ने फिटनेस पर खुलकर बातचीत की। कियारा आडवाणी से इस दौरान करीना कपूर ने पूछा कि उन्हें किस हीरोइन की फिगर से जलन होती है।

बॉलीवुड एक्ट्रेस कियारा आडवाणी इन दिनों बॉलीवुड में छाई हुई हैं। उनकी एक के बाद एक लगातार फिल्मों में रिलीज हो रही हैं और कमाल दिखा रही हैं।



जल्द ही कियारा आडवाणी की आगामी फिल्म 'इंदु की जवानी' भी रिलीज होने वाली है। फिल्म का ट्रेलर पहले ही लोगों को काफी पसंद आया है।

कियारा आडवाणी हाल ही में करीना कपूर के चैट शो 'वाट तुम वॉन्ट' में नजर आईं। इस दौरान कियारा आडवाणी और करीना कपूर ने फिटनेस पर खुलकर बातचीत की। कियारा आडवाणी से इस दौरान करीना कपूर ने पूछा कि उन्हें किस हीरोइन की फिगर से जलन होती है।

इस सवाल के जवाब में उन्होंने दीपिका पादुकोण और वैटरीना वैफ का नाम लिया और कहा कि इन दो एक्ट्रेस की शानदार फिगर से उन्हें जलन होती है। कियारा आडवाणी ने आगे कहा कि ये दोनों इतनी फिट और लंबी हैं कि इन पर कोई भी ड्रेस जम जाती है। बता दें कि कियारा आडवाणी और करीना कपूर ने एक साथ फिल्म 'गुड न्यूज' में काम किया था। कियारी की फिल्म 'लक्ष्मी' भी हाल ही में रिलीज हुई है। कियारा आडवाणी ने 2014 में 'फगली'

फिल्म से करियर की शुरुआत की थी। कियारा की आने वाली फिल्मों की बात करें तो इनमें सिद्धार्थ मल्होत्रा के साथ 'शेरशाह', करतिक आर्यन के साथ 'भूलभुलैया 2' और 'इंदु की जवानी' भी शामिल हैं। बता दें कि कियारा आडवाणी ने तेलुगू फिल्म 'भारत अने नेनू' से भी खूब सरुखियां बटोरी थीं। इस फिल्म में वह साउथ के दिग्गज एक्टर महेश बाबू के साथ नजर आई थीं। शाहिद कपूर के साथ फिल्म 'कबीर सिंह' से कियारा आडवाणी को काफी लोकप्रियता मिली थी।

रहमान की दुआ रंग लाई

एक बार रहमान की बहन की बहुत तबियत खराब हो गई थी. उन्होंने हर जगह बहुत मिन्नतें मांगी, लेकिन कुछ नहीं हुआ. फिर वह एक मस्जिद में अपनी बहन के ठीक होने की दुआ करने गए



मशहूर म्यूजिक कंपोजर और सिंगर एआर रहमान किसी परिचय के मोहताज नहीं हैं. रहमान ने साउथ सिनेमा, बॉलीवुड और हॉलीवुड में अपने टैलेंट के दम पर पहचान बनाई है. एआर रहमान के बारे में ऐसी कई बातें हैं, जिनसे आप अनजान होंगे जो कि आज हम आपको बताते हैं. कम ही लोग जानते हैं कि रहमान का असली नाम दिलीप कुमार था, लेकिन उन्होंने इसे बदल दिया. इसके पीछे भी एक दिलचस्प कहानी है.

9 साल की उम्र में रहमान के पिता का निधन हो गया था. रहमान की बायोग्राफी 'द स्पिरिट ऑफ़ म्यूजिक' के मुताबिक, एक ज्योतिष की सलाह पर रहमान ने अपना नाम बदला था, क्योंकि उन्हें अपना नाम पसंद नहीं था. इस वजह से जब कुंडली देखने पर ज्योतिष ने उनकी बहन को रहमान के नाम बदलने की सलाह दी तो उन्होंने ऐसा ही किया.

इसके अलावा रहमान पहले हिंदू थे, लेकिन मुस्लिम धर्म स्वीकार कर लिया था. दरअसल, एक बार रहमान की बहन की बहुत तबियत खराब हो गई थी. उन्होंने हर जगह बहुत मिन्नतें मांगी, लेकिन कुछ नहीं हुआ. फिर वह एक मस्जिद में अपनी बहन के ठीक होने की दुआ करने गए और ये दुआ रंग लाई.

रहमान इस बात से प्रभावित हुए और उन्होंने अपना धर्म बदल लिया. रहमान का बचपन भी तंगहाली में बीता था, लेकिन अब उन्हें फीस के तौर पर करोड़ों रुपये मिलते हैं. कभी उन्हें रिकॉर्ड प्लेयर को ऑपरेट करने के लिए 50 रुपये मिलते थे. वह बचपन में इंजीनियर बनना चाहते थे, लेकिन उनका ये सपना पूरा नहीं हो पाया. रहमान की शादी सायरा बानो से हुई है. उनके तीन बच्चे हैं.

स्वास्थ्य

अजवाइन है कई बीमारियों का रामबाण इलाज

कु शोभा



परिवार में किसी को छोटी सी स्वास्थ्य संबंधी परेशानी होते ही हम परेशान हो उठते हैं. डॉक्टर को फोन मिलाने से लेकर कई बार तो खुद ही बुखार चेक करने तक की जतन हम कर डालते हैं. लेकिन क्या आपको पता है कि आपकी रसोई में ही आपकी तमाम दिक्कतों की दवाएं हमेशा पड़ी रहती हैं? जैसे, आपका पेट दर्द कर रहा हो, या गैस हो गई हो तो आप क्या करेंगे? माइग्रेन की समस्या हो, दवा खत्म हो तब आप क्या करेंगे? या अचानक गला खराब हो जाए तो? इन सारी समस्याओं का इलाज आपकी रसोई में मिलने वाला अजवाइन ही है.

अजवाइन (Ajwain) हमारे रसोई में सबसे कम जगह घेरता है, लेकिन होता बहुत काम

का है. अजवाइन सेहत की कई समस्याओं से निजात दिलाने में कारगर साबित हो सकता है. ये सर्दी-खांसी, सिर दर्द ठीक करने के साथ साथ आपकी त्वचा के लिए भी खास है. आइये जानते हैं अजवाइन से जुड़े कुछ घरेलू नुस्खों के बारे में.

अजवाइन यानि पेट का डॉक्टर -

आपके भोजन में अजवाइन का नियमित सेवन आपकी पाचन प्रक्रिया को दुरुस्त रखता है. लेकिन फिर भी कई बार दिक्कतें आ ही जाती हैं. ऐसे में अगर आपको गैस की दिक्कत हो रही हो, तो अजवाइन आपके लिए रामबाण उपाय है. उल्टी की समस्या होने पर भी अजवाइन का सेवन किया जा सकता है.

अजवाइन, काला नमक और सूखे अदरक को पीसकर चूरन तैयार कर लें. खाना खाने के बाद इस चूरन का सेवन करने से खट्टी डकार और गैस की समस्या तुरंत छू मंतर हो जाती है.

कान को भी आराम -

आपके कान में पानी चला हो गया हो. या कान में तेज दर्द हो रहा हो. ऐसी सूरत में इंसान को कुछ नहीं सूझता. ऐसे में अजवाइन का तेल कान में डालने से कान दर्द ठीक हो जाता है.

बुजुर्गों का साथी

घर के बड़े बुजुर्गों को अक्सर गठिया की

समस्या आ जाती है. गठिया रोग से होने वाला दर्द बेहद भयानक और असह्य होता है. लेकिन अजवाइन की पोटली से सिकाई करने से गठिया में आराम मिलता है.

गले से लेकर सिर दर्द में भी देता है आराम

अगर आपका खराब है तो आपकी रसोई में कई सारी चीजें उसके उपचार में काम आ सकती हैं, लेकिन जब मामला हाथ से बिगड़ता दिखे और किसी नुस्खे से आराम न मिले तो तुरंत अजवाइन उबाल डालिए और फिर उससे गरारे कर लीजिए, आपका गला ठीक हो जाएगा. यही नहीं, माइग्रेन के भयानक दर्द में अगर आपने अजवाइन को पानी में उबाल कर उस पानी का सेवन किया, तो माइग्रेन का दर्द थोड़ी ही देर में छू मंतर हो जाता है.

चेहरे की सुंदरता का साथी

अगर आपके चेहरे पर मुंहासे हैं तो दही के साथ थोड़े से अजवाइन पीसकर इस लेप को चेहरे पर लगाएं. जब लेप सूख जाए तब इसे गर्म पानी से साफ कर लें. कुछ ही दिनों में मुंहासे गायब हो जाएंगे.

ओमेगा 3 की खान है अजवाइन

अजवाइन में ओमेगा 3 फैटी एसिड काफी मात्रा में पाया जाता है, जो दिल और दिमाग दोनों के स्वास्थ्य के लिए बेहद फायदेमंद है. यह शरीर में बैड कोलेस्ट्रॉल को घटाता है और दिमाग को महत्वपूर्ण पोषक तत्वों की आपूर्ति करता है. अजवाइन की चाय में दिमाग के ट्यूमर को रोकने की क्षमता होती है. इसके अलावा इसमें फाइबर भी पाया जाता है, जो दिल के मरीजों के लिए फायदेमंद है.

तृणमूल कांग्रेस में असंतोष के स्वर मुखर

कोलकाता-भाजपा सांसद सौमित्र खान ने तृणमूल कांग्रेस में असंतोष के स्वर मुखर होने के बीच दावा किया कि राज्यपाल पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी से विधानसभा में अपना बहुमत साबित करने के लिए जल्द ही कह सकते हैं। इस बीच, तृणमूल कांग्रेस ने कहा कि भगवा खेमे के नेताओं के मन में लोकतंत्र के लिये कोई सम्मान नहीं है। भारतीय जनता युवा मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष खान ने जलपाईगुड़ी में एक कार्यक्रम के इतर कहा कि सत्तारूढ़ दल में मौजूदा उथल-पुथल और असंतोष के कारण यह प्रश्न सामने खान ने कहा, “विधायक जिस प्रकार असंतोष व्यक्त कर रहे हैं और तृणमूल छोड़ रहे हैं, उसे देखते हुए राज्यपाल मुख्यमंत्री से जल्द बहुमत साबित करने के लिए कह सकते हैं... इसकी संभावना है।” उन्होंने कहा कि ममता बनर्जी के मंत्रिमंडल के कई मंत्री भाजपा में शामिल होने के लिए तैयार हैं। तृणमूल के सांसद सौगत राय ने खान के बयान पर टिप्पणी की कि उनके जैसे भाजपा



नेता संविधान और उसके प्रावधानों के बारे में कुछ नहीं जानते। राय ने कहा, “पहली बात तो यह है कि खान को यह कैसे पता कि राज्यपाल इस प्रकार का असंवैधानिक कदम उठाएंगे? चुनी गई सरकार के साथ इस तरीके से व्यवहार नहीं किया जा सकता... और विधायकों का बहुमत मुख्यमंत्री के साथ है। तृणमूल के पास सदन में 218 विधायकों का समर्थन है।”

शुभेंदु अधिकारी समेत तृणमूल के कई नेताओं ने पार्टी को लेकर हाल में असंतोष जताया है। पार्टी आलाकमान से नाराज चल रहे अधिकारी ने राज्य के परिवहन मंत्री के पद से इस्तीफा दे दिया था।

भाजपा राज्य अध्यक्ष दिलीप घोष ने कहा कि तृणमूल में अधिकारी को निकालने का साहस ही नहीं है क्योंकि पार्टी को डर है कि “जल्द ही वह

भाजपा सांसद सौमित्र खान ने तृणमूल कांग्रेस में असंतोष के स्वर मुखर होने के बीच दावा किया कि राज्यपाल पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी से विधानसभा में अपना बहुमत साबित करने के लिए जल्द ही कह सकते हैं।

लुप्त हो सकती है।” घोष ने आरोप लगाया कि सत्तारूढ़ पार्टी के नेता अपने घरों और कार्यालयों से कभी बाहर ही नहीं निकले और अब वे 2021 विधानसभा चुनाव से पहले जमीनी हकीकत का पता लगाने के लिए बाहर निकलने के लिए “मजबूर” हैं। पश्चिम बंगाल की 294 सदस्यीय विधानसभा के लिये चुनाव अगले वर्ष अप्रैल- मई में होने की संभावना है।

यूपी के बरेली में दर्ज हुआ लव जिहाद का पहला केस



लखनऊ-उत्तर प्रदेश के बरेली जिले में एक युवती के पिता की शिकायत के आधार पर राज्य में धर्मांतरण प्रतिषेध कानून के तहत पहला मामला दर्ज किया गया है। अधिकारियों ने बताया कि मामला बरेली जिले के देवरनियां थाने में दर्ज किया गया। उत्तर प्रदेश के अपर मुख्य सचिव गृह अवंनीश अवस्थी की ओर से रविवार को जारी बयान के अनुसार देवरनियां पुलिस थाने (बरेली) के अंतर्गत शरीफ नगर गांव के टीकाराम ने यह मामला दर्ज कराया है, जिसमें उसने उसी गांव के एक व्यक्ति - उवैश अहमद पर उसकी बेटी को “बहला फुसलाकर” धर्मांतरण की कोशिश करने का आरोप लगाया।

उवैश अहमद के खिलाफ भारतीय दंड संहिता और नए जबरन धर्मांतरण प्रतिषेध कानून के तहत मामला दर्ज किया गया है। बरेली के वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक रोहित सिंह सजवाण ने बताया कि आरोपी की तलाश के लिए पुलिस की चार टीमें बनाई गई हैं। शिकायत के अनुसार टीकाराम की बेटी और उवैश अहमद कक्षा 12वीं में एक ही कालेज में पढ़े हैं। पीड़िता के पिता ने बताया कि उनकी बेटी इंटर की पढ़ाई पूरी करने के बाद दूसरे कालेज में पढ़ने लगी। उन्होंने बताया कि तीन साल पहले उवैश अहमद ने उस पर धर्म परिवर्तन कर निकाह करने का दबाव बनाया, लेकिन जब वह धमकी देने लगा तो उसने परिजनों को यह बात बताई। लड़की के पिता ने बताया कि इस बीच लड़की की शादी हो गई लेकिन उसकी शादी के बाद भी उवैश अहमद परिजन को परेशान करता रहा। लड़की के पिता ने बताया कि शनिवार को उवैश उनके घर आ गया और कहने लगा, “अपनी बेटी को ससुराल से घर बुलाओ, उसे मुझसे निकाह करना होगा।”

टीकाराम के मुताबिक अहमद ने तमंचा दिखाकर जान से मारने की धमकी भी दी। उन्होंने बताया कि रात आठ बजे लड़की के पिता थाने पहुंचे और पूरा घटनाक्रम बताया। उनकी तहरीर पर रात 11 बजे देवरनियां थाने में मामला दर्ज किया गया है। गौरतलब है कि उत्तर प्रदेश की राज्यपाल आनंदीबेन पटेल ने ‘उत्तर प्रदेश विधि विरुद्ध धर्म संपर्कित प्रतिषेध अध्यादेश, 2020’ को शनिवार को मंजूरी दे दी। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की अध्यक्षता में पिछले पिछले दिनों कैबिनेट की बैठक में इस अध्यादेश को मंजूरी दी गई थी। इसमें विवाह के लिए छल, कपट, प्रलोभन देने या बलपूर्वक धर्मांतरण कराए जाने पर अधिकतम 10 वर्ष कारावास और जुर्माने का प्रावधान किया गया है।

कोराना टीके से प्रतिकूल प्रभाव पड़ने के दावों की पड़ताल कर रहे हैं डीसीजीआई व आचार समिति

नई दिल्ली-चेन्नई में कोविड-19 के टीके के परीक्षण में शामिल एक प्रतिभागी को प्रतिकूल प्रभाव होने के दावों के बाद भारत के औषध महानियंत्रक (डीसीजीआई) और संस्थान की आचार समिति इस बात की पड़ताल कर रहे हैं कि क्या इसका संबंध संबंधित व्यक्ति को दी गयी टीके की खुराक से है।

पुणे स्थित सीरम इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया (एसआईआई) द्वारा किये जा रहे टीके के तीसरे चरण के परीक्षण में सहभागी चेन्नई के एक 40 वर्षीय कारोबारी ने टीके की डोज लेने के बाद कथित रूप से गंभीर न्यूरोलॉजी संबंधी और मनोवैज्ञानिक लक्षण उभरने का दावा करते हुए पांच करोड़ रुपये का मुआवजा मांगा है। उसे एक अक्टूबर को चेन्नई के श्री रामचंद्र इंस्टीट्यूट ऑफ हायर एजुकेशन एंड रिसर्च में यह खुराक दी गयी थी जो परीक्षण स्थलों में शामिल है।

व्यक्ति की ओर से एक लॉ फर्म ने भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (आईसीएमआर) के महानिदेशक, भारत के औषध महानियंत्रक, केंद्रीय औषध मानक नियंत्रण संगठन, एस्ट्राजेनेका यूके के सीईओ, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी के टीके के परीक्षण के मुख्य अनुसंधानकर्ता प्रोफेसर एंड्रयू पोलांड तथा श्री रामचंद्र हायर एजुकेशन एंड रिसर्च के कुलपति को कानूनी नोटिस भेजा है।

प्रतिभागी ने पांच करोड़ रुपये की क्षतिपूर्ति और साथ ही टीके के परीक्षण, उत्पादन और वितरण पर तत्काल रोक लगाने की मांग भी की है। आईसीएमआर के महामारी विज्ञान और सामक रोग विभाग के प्रमुख डॉ समिरन पांडा ने कहा कि संस्थान की आचार समिति और डीसीजीआई दोनों इस बात की जांच कर रहे हैं कि जिस उत्पाद पर अध्ययन चल रहा था, यानी कोरोना वायरस की रोकथाम वाले संभावित टीके और प्रतिकूल प्रभावों के बीच क्या कोई कड़ी है।

एसआईआई ने ऑक्सफोर्ड के कोविड-19 के टीके के विकास के लिए ब्रिटिश-स्वीडिश कंपनी एस्ट्राजेनेका के साथ साझेदारी की है।

इससे पहले फार्मा कंपनी एस्ट्राजेनेका ने अध्ययन में शामिल एक प्रतिभागी में अज्ञात बीमारी का पता चलने के बाद अन्य देशों में क्लिनिकल परीक्षण पर रोक लगा दी थी और इसी के मद्देनजर डीसीजीआई ने 11 सितंबर को एसआईआई को भी ऑक्सफोर्ड के कोविड-19 रोधी टीके के दूसरे और तीसरे चरण के परीक्षण में किसी नये प्रतिभागी को अगले आदेश तक शामिल नहीं करने को कहा था। हालांकि एसआईआई को परीक्षण पुनः शुरू करने के लिए 15 सितंबर को मंजूरी दे दी गयी थी।

ब्रह्मपुत्र नदी पर महत्वपूर्ण बांध का निर्माण करेगा चीन-अधिकारी

बीजिंग-चीन, तिब्बत में ब्रह्मपुत्र नदी पर एक प्रमुख बांध का निर्माण करेगा और अगले साल से लागू होने वाली 14वीं पंचवर्षीय योजना में इससे संबंधित प्रस्ताव पर विचार किया जा चुका है। चीन की आधिकारिक मीडिया ने बांध बनाने का जिम्मा प्राप्त कर चुकी एक चीनी कंपनी के प्रमुख के हवाले से यह जानकारी दी है।

ग्लोबल टाइम्स की खबर के अनुसार पावर कंस्ट्रक्शन कॉर्पोरेशन ऑफ चाइना के अध्यक्ष यांग जियोंग ने कहा कि कि चीन यारलुंग जंग्बो नदी ब्रह्मपुत्र का तिब्बती नामा के निचले हिस्से में जलविद्युत उपयोग परियोजना शुरू करेगा। और यह परियोजना जल संसाधनों और घरेलू सुरक्षा को मजबूत करने में मददगार हो सकती है।

ग्लोबल टाइम्स ने कम्युनिस्ट यूथ लीग ऑफ चाइना की केन्द्रीय समिति के वी-चैट अकाउंट पर डाले गए एक लेख का हवाला देते हुए जानकारी दी कि यांग ने कहा है कि सत्तारूढ़ कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ चाइना सीपीसी देश

की 14वीं पंचवर्षीय योजना 2021-251 तैयार करने के प्रस्तावों में इस परियोजना को शामिल करने और 2035 तक इसके जरिये दीर्घकालिक लक्ष्य हासिल करने पर विचार कर चुकी है।

इस योजना के बारे में विस्तृत जानकारी अगले साल नेशनल पीपुल्स कांग्रेस एनपीसी द्वारा औपचारिक अनुसमर्थन किये जाने के बाद सामने आने की उम्मीद है। ब्रह्मपुत्र नदी भारत और बांग्लादेश से होकर गुजरती है। ऐसे में बांध निर्माण के प्रस्ताव से दोनों देशों की चिंताएं बढ़ गई हैं। हालांकि चीन ने इन चिंताओं को खारिज करते हुए कहा है कि वह उनके हितों को भी ध्यान में रखेगा।

भारत सरकार नियमित रूप से अपने विचारों और चिंताओं से चीनी अधिकारियों को अवगत कराती रही है और भारत ने चीन से यह सुनिश्चित करने का आग्रह किया है कि नदी के ऊपरी हिस्सों में होने वाली गतिविधियों से निचली हिस्से से जुड़े देशों के हितों को नुकसान न हो।

एक ऐसी नदी, जो पत्थरों में करती है रंगीन चित्रकारी

बांदा-उत्तर प्रदेश के बांदा जिले से बह रही केन देश की दूसरी ऐसी नदी है, जो पत्थरों में रंगीन चित्रकारी करती है। देश और विदेश में यह आकृतिशुदा पत्थर शज़र नाम से चर्चित है, 2398सीरसी भाषा में शज़र का अर्थ पेड़ होता है। हालांकि, मुस्लिम देशों में इसे हकीक भी कहते हैं। यह पत्थर दुनिया में सिर्फ भारत की दो नदियों केन और नर्मदा में ही पाया जाता है। उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश में विभक्त बुंदेलखंड के बांदा जिले के कनवारा गांव में केन नदी का अंतिम छोर है। इस गांव में यह नदी यमुना नदी में मिलकर विलुप्त हो जाती है। केन नदी में मिलने वाला शज़र पत्थर मध्य प्रदेश के पन्ना जिले के अजयगढ़ कस्बे से लेकर उत्तर प्रदेश के बांदा जिले के कनवारा गांव तक ही मिलता है। इस नदी का उद्गम स्थान दमोह जिले की कैमूर पहाड़ी है, जो सात पहाड़ियां चिरकर यमुना नदी तक जाती है। किंवदंतियों में केन नदी के नामकरण की कहानी भी बड़ी अगूढ़ है। पौराणिक ग्रन्थों के अनुसार, केन नदी का पुराना नाम कर्णवती नदी था। इसके बाद इसे किनिया और कन्या के बाद अब अपभ्रंश में केन कहा जाने लगा। महाभारत काल में, केन-एक कुमारी कन्या है का उल्लेख मिलता है।

बॉलीवुड अभिनेत्री उर्मिला मातोंडकर होंगी शिवसेना में शामिल



अभिनेत्री उर्मिला मातोंडकर शिवसेना में शामिल होंगी। मातोंडकर 2019 के लोकसभा चुनाव में मुंबई उज्जरी सीट से कांग्रेस टिकट पर चुनाव लड़ी थीं। हालांकि उन्हें चुनाव में हार का सामना करना पड़ा।

मुंबई-बॉलीवुड अभिनेत्री उर्मिला मातोंडकर शिवसेना में शामिल होंगी। उन्होंने 2019 में कांग्रेस के टिकट पर लोकसभा का चुनाव लड़ा था और बाद में पार्टी छोड़ दी थी। पार्टी के एक पदाधिकारी ने यह जानकारी दी। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे के करीबी सहयोगी हर्षल प्रधान ने कहा कि मातोंडकर मुख्यमंत्री की मौजूदगी में शिवसेना में शामिल होंगी। शिवसेना ने राज्यपाल बी एस कोश्यारी के पास मातोंडकर का नाम विधान परिषद में राज्यपाल कोटा से नामित करने के लिए भेजा है।

इसके अलावा इस कोटे के लिए एमहा विकास अघाडी ने 11 और नाम भेजे हैं। हालांकि राज्यपाल ने अभी इन 12 नामों को मंजूरी नहीं दी है। मातोंडकर 2019 के लोकसभा चुनाव में मुंबई उत्तरी सीट से कांग्रेस टिकट पर चुनाव लड़ी थीं। हालांकि उन्हें चुनाव में हार का सामना करना पड़ा। बाद में उन्होंने कांग्रेस की मुंबई इकाई के कामकाज के तरीकों को लेकर पार्टी छोड़ दी। हाल में उन्होंने मुंबई की तुलना पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर (पीओके) से करने के लिए कंगना रनौत की आलोचना की थी।